भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 10 | उदयपुर मंगलवार 01 जून 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सोने की भगवद् गीता के बहाने राजस्थान विद्यापीठ

- डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर में पं. जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय अन्य विश्वविद्यालयों से अनेक सन्दर्भों में अपनी निराली पहचान लिये है। कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि प्राचीन ग्रन्थों की शोध-खोज-संग्रह तथा प्रकाशन की दिशा में अग्रणी संस्थान साहित्य संस्थान में सदियों पुरानी 3380 दुर्लभ पाण्डुलिपियों तथा ग्रन्थों का अत्यन्त ही दुर्लभ तथा मूल्यवान संग्रह है।

सोने की स्याही से लिखी भगवद् गीता की दुर्लभ पांडुलिपि

इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि भगवद् गीता है जो सोने की स्याही से संस्कृत में लिखी गई है। इसके अलावा 12वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखा गया नारायण विलास नामक ग्रन्थ भी है।

इसका महत्त्व इसलिए भी है कि इसमें लंका के राजवैद्य सुषैण और पाण्डवों के भाई नकुल के चिकित्सा सम्बन्धी सूत्रों को भी संहिताबद्ध किया गया है। नकुल एक जानेमाने योद्धा तो थे ही पर उतने ही दक्ष-कुशल चिकित्सक भी थे। यह ग्रन्थ मुख्यत: रामायण तथा महाभारतकालीन दो युगों की चिकित्सा पद्धतियों तथा उपचार विधियों की सटीक जानकारी लिए है।

सचित्र मधुमालती : दोनों चित्र राजस्थान विद्यापीठ विवि पुस्तकालय के सौजन्य से

कुलपति प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि पं. नागर ने आजादी के बाद ही राजस्थान विद्यापीठ नामक संस्था की स्थापना कर शिक्षा मुख्यत: प्रौढ़शिक्षा को लेकर जमीनी स्तर से संकल्पबद्ध कार्य प्रारम्भ कर दिया था। इसके लिए मेवाड़ महाराणा भूपालसिंहजी की भी बड़ी प्रेरणा और भरपूर सहयोग रहा।

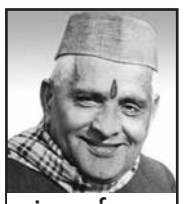

पं. जनार्दनराय नागर

पं. नागर ने तब सुदूर आदिवासी जैसे पिछड़े क्षेत्र झाड़ोल-फलासिया में लालटेन के माध्यम से अलख जगाया। गांव-गांव रोशनी फैलाने वाले कार्यकर्त्ता तैयार किये। यह कार्यक्रम अन्यत्र भी फैलाया।

उदयपुर के साथ झाड़ोल, डबोक, अजमेर मुख्य केन्द्र स्थापित किये। डबोक में तो वह ऐतिहासिक भवन भी विद्यापीठ की संरक्षित धरोहर बना हुआ है जिसमें जेम्स कर्नल टॉड नामक अंग्रेज इतिहासकार ने 'एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' नाम से ग्रन्थ लिखा था।

यह लेखन टॉड ने सन् 1818 से लेकर 1822 तक के अपने चार वर्षीय प्रवास के दौरान किया था। कर्नल टॉड लिखित यह राजस्थान का पहला प्रामाणिक इतिहास लेखन ही नहीं, प्रथम लिखी ऐतिहासिक दृष्टि सम्पन्न कृति भी है।

प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि पं. नागर बहुमुखी प्रतिभा के अद्‌भुत शिल्पी थे। चहुंओर ज्ञान के विविध आयाम स्थापित करने और सुसंचालित करने के लिए उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र को विभिन्न युनिटों में बांटते हुए विभिन्न विचारधाराओं के सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक दृष्टि सम्पन्न साथियों को जोड़ा और जनतंत्रीय कार्यपद्धति का पोषण किया।

साहित्य संस्थान को शोध संस्थान के रूप में प्रारम्भ कर विविध ठिकानों तथा ग्रन्थागारों में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर साहित्य संस्थान को समृद्ध बनाया। प्रारम्भ में पं. मोहनलाल व्यास, सांवलदान आशिया जैसे विद्वानों तथा संग्रहकर्त्ताओं का सहयोग रहा फिर प्रख्यात इतिहास लेखक डॉ. मोतीलाल मेनारिया की महत्त्वपूर्ण सेवाएं ली गईं।

उन्होंने अपने निदेशकीय काल में संस्कृत एवं पुरातत्वान्वेषी कृष्णचन्द्र शास्त्री तथा डॉ. महेन्द्र भानावत की सेवाएं लेकर राजसमन्द झील की पाल नौ चौकी स्थित 25 शिलाओं पर उत्कीर्ण संस्कृत महाकाव्य राजप्रशस्ति के इम्प्रेशन लेने का उल्लेखनीय कार्य-सम्पादन करवाया।

प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि तब सौभाग्यसिंह शेखावत डिंगल के प्रख्यात जानकार शोधक तथा बनारस निवासी कृष्णचन्द्र शास्त्री संस्कृत के उद्‌भट विद्वान थे। यह 1965-67 का समय था जब कविराव मोहनसिंह भी वहां आकर 'पृथ्वीराज रासो' नामक ग्रन्थ के विशालकाय सबदकोश का निर्माण कर रहे थे। उनके साथ उमाशंकर शुक्ल जुड़े हुए थे।

डॉ. मेनारिया ने पं. नन्दकिशोर व्यास को भी संस्थान में रखा जो हस्तलिखित ग्रन्थों की पाण्डुलिपि लेखन का काम करने के दक्ष-कुशल लिपिकार थे। गिरधारीलाल शर्मा, भगवतीलाल भट्ट, पं. विश्वनाथ व्यास ने भी यहां सेवाएं दीं।

डॉ. भानावत ने वहां रहकर महाराणा जवानसिंह लिखित 'ब्रजराज-काव्य-माधुरी' नामक ग्रन्थ का सम्पादन किया। महाराणा ने 'ब्रजराज' नाम से विभिन्न पदों की रचना की थी जिसका सम्पादन चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर किया गया था।

डॉ. भानावत ने यहां से प्रकाशित त्रैमासिक 'शोधपत्रिका' के सम्पादन के साथ राणारासो तथा हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज एवं सरवहिया कहवाट री वार्ता का सम्पादन भी किया। बाद में साहित्य संस्थान में डॉ. देवीलाल पालीवाल तथा डॉ. देव कोठारी निदेशक बनकर आये।

डबोक में भवानीशंकर गर्ग के जिम्मे सबसे बड़ी जिम्मेदारी सौंपी। अजमेर में बी. एल. पारख को स्वतंत्र दायित्व सौंपा। समाज शिक्षण के लिए कल्याणमल जैसाणी, भाई भगवान और प्रिंटिंग प्रेस का जिम्मा मुरलीधर वर्मा तथा शिक्षा का दायित्व कृष्णकुमार वशिष्ठ को सौंप रखा था। पं. नागरजी ने साप्ताहिक 'जनमंगल' प्रारम्भ किया। दिन को रोजगार करने वाले युवकों को रात्रि शिक्षण के लिए श्रमजीवी कॉलेज शुरू किया। डॉ. शान्ति भारद्वाज भी यहीं पढ़ाते रहे। बाद में कोटा में हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान प्रारम्भ कर उन्हें वहां का निदेशक बनाया।

मदनलाल लाहोटी तथा हस्तीमल जैन को मुख्य वित्त नियंत्रण का कार्य दिया। उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क नाम से एक कॉलेज भी डॉ. पी. सी. थॉमस से प्रारम्भ किया। पं. नागर जो जन्नुभाई के नाम से ही लोकप्रिय थे, शिक्षा, संस्कृति के साथ राजनीति में भी पूरी दखल रखते थे।

मोहनलाल सुखाड़िया, माणिक्यलाल वर्मा, बलवंतसिंह मेहता, हरिभाऊ उपाध्याय जैसों से उनकी अभिन्न मैत्री थी। उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार का जबर्दस्त कार्य किया। प्रारम्भ में तो राजस्थान विद्यापीठ का नाम ही हिन्दी विद्यापीठ रखा गया। हिन्दी के लिए बड़े-बड़े आयोजन किये। पुरुषोत्तमदास टंडन को आमंत्रित किया। अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों तथा गांधीवादी नेताओं का सान्निध्य लिया।

कड़े संघर्ष में जन्नुभाई ने विद्यापीठ की सारी प्रवृत्तियां चलाईं और फिर इसे 1983 में विश्वविद्यालय का रूप दिया। वे प्रथम कुलपति बने। उनके बाद उनके नाम से विश्वविद्यालय बना।

बाद में प्रो. कृष्णकुमार वशिष्ठ इसके कुलपति बने फिर भवानीशंकर गर्ग कुलाधिपति बने। वर्तमान में प्रो. सारंगदेवोत हैं जिन्होंने अपने कार्यकाल में अनेक नवीन प्रवृत्तियां, विभाग और गतिविधियां प्रारम्भ करते इसका जो सर्वदिशीय बहुमुखी विकास किया उसकी गाथा का लेखांकन जब भी किया जायगा, एक नये सूत्रपात, एक नये अध्याय, तथा एक नये इतिहास का ही स्वर्णिम सुप्रभात होगा।

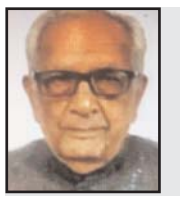

मैं सैनिक हूं, सूर्य-पुत्र मैं

मैं सैनिक हूं, सूर्य-पुत्र मैं,
अंगारों के स्वप्न सजाता।

(1)

हिम की धरती, हिम का अम्बर,
मारूत में हिम बहता है।
श्वासों में सोता तुषार-घन,
निशि का तम जम रहता है।।
किन्तु रक्त में अग्नि-ज्वार है,
महा प्रलय का पर्व मनाता।
मैं सैनिक हूं, सूर्य-पुत्र मैं,
अंगारों के स्वप्न सजाता।।

(2)

हर घाटी की हरियाली का,
मैं ही तो हूं रखवाला।
मेरे ही भुजदण्डों से है,
रक्षित यह पर्वत माला।।
प्रहरी बना घूमता निशिभर,
नव विहान का सूरज लाता।
मैं सैनिक हूं, सूर्य-पुत्र मैं,
अंगारों के स्वप्न सजाता।।

(3)

मेरे संकेतों से तरु की,
हर डाली मुस्काती है।
मेरी छाया देख लता की,
हर झोली भर जाती है।।
उठते झूम शिखर पर्वत के,
जब मैं जय के गीत सुनाता।
मैं सैनिक हूं, सूर्य-पुत्र मैं,
अंगारों के स्वप्न सजाता।।

-डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

पोथीखाना

स्थावर जीवों पर पठनीय कृति

जीव-अजीव पर जितना सूक्ष्म और वैज्ञानिक विश्लेषण जैन-दर्शन में मिलता है उतना अन्य किसी दर्शन-शास्त्र में नहीं मिलेगा। अनेक भेद-उपभेद तथा वर्ग-वर्गीकरण द्वारा इन जीवों की स्थिति का वर्णन अनेक दृष्टियों से रूचिपूर्ण है।

मोटे रूप में जीव दो प्रकार के - स्थावर तथा त्रसजीव हैं। इनमें स्थावर जीव स्थिर यानी अचल और गतिहीन होते हैं। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति ; ये पांच प्रकार के स्थावर जीव हैं जो चेतन और जीवधारी तो होते हैं पर केवल स्पर्श इन्द्रिय वाले होते हैं। दूसरे त्रस्त जीव होते हैं जो दो, तीन, चार तथा पांच इन्द्रिय होते हैं। ऐसे जीव जो चलते-फिरते हैं। इनमें वे सभी कीड़े-पतंगे, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु आते हैं जो दिखाई देने वाले भी हैं और वे भी जो सूक्ष्म-से-सूक्ष्म उपकरणों से भी दिखाई नहीं देते।

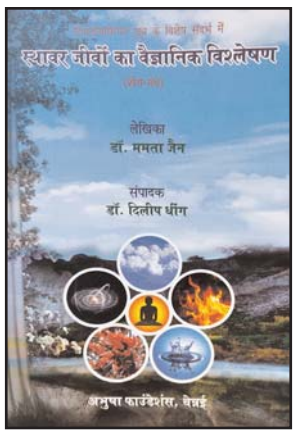

प्रस्तुत ग्रन्थ शोधग्रन्थ है। इसमें डॉ. ममता जैन ने बड़े ही मनोयोग से स्थावर जीवों की सत्ता-महत्ता, उपयोगिता एवं अनिवार्यता पर दिलचस्प वैज्ञानिक विश्लेषण किया है। इस अध्ययन का आधार मुख्यत: जीवाजीवाभिगम सूत्र है जिसमें इन जीवों पर गहरे पानी पैठ दी गई है।

यह वर्णन बड़ा ही सटीक, सुरूचिपूर्ण तथा सुललाम शुचिता लिए है। इसका महत्व प्रासंगिक इसलिए भी है कि डॉ. ममता स्वयं जैन हैं। जैन संस्कारों से सरोकारित, संस्कारित, सोपित आदर्श गृहस्थ महिला के रूप में पारम्परिक परिवेश लिए वे गृहशोभा बनी हुई हैं।

यह अध्ययन कुल आठ अध्याय लिये है। पहला अध्याय आगम साहित्य की परम्परा से सम्बद्ध है। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने जो उपदेश दिया, उनका संकलन जिन ग्रन्थों में मिलता है वे सभी श्रुत अर्थात् सुने हुए हैं जो अगम नाम से जाने गये। दूसरा अध्याय जीव तत्व की अवधारणा के प्ररिप्रेक्ष्य में स्थावर जीव का विश्लेषण है।

बाद के अध्याय क्रमश: पृथ्वीकाय, अपकाय (जलकाय), वायुकाय, तेजस (अग्निकाय) तथा वनस्पति कायिक जीवों का स्वरूप, पहचान, वर्गीकरण, संवेदनशीलता, पर्यावरण तथा मानव पर पड़ने वाले प्रभाव एवं संरक्षण पर विस्तार से लिखे गये हैं। अन्तिम आठवें अध्याय में वर्तमान समय में ऐसे शोध की आवश्यकता और उपयोगिता को रेखांकित किया गया है।

दो सौ से अधिक पृष्ठ लिये यह ग्रन्थ अभुषा फाउण्डेशन के अभय श्रीश्रीमाल, 27, महलै रंगनाथन स्ट्रीट, टी. नगर, चैन्नई-600017 से प्रकाशित 400 रूपये मूल्य का है।

उल्लेखनीय बात यह है कि इस शोधग्रन्थ को पूर्ण करने में लेखिका ने 150 से अधिक मूल ग्रन्थों, आधुनिक शोधग्रन्थों, विद्वानों तथा पत्र-पत्रिकाओं का वैचारिक एवं सन्दर्भित सहयोग लिया है जिनकी सूची ग्रन्थ के अन्त में दी गई है। कहना नहीं होगा कि डॉ. दिलीप धींग के दृष्टिवान सम्पादन में इन सब ग्रन्थों का सत्व-सार लिए यह ग्रन्थ भी एक अत्यन्त उपयोगी धर्मग्रन्थ ही हो गया है।

- म. भा.

राजराणा हरिसिंह हरिशरण हुए

अक्षय तृतीया 14 मई को ताणा के राजराणा हरिसिंह हरिशरण हो गए। उनके निर्देशन में संत-कवि चतुरसिंहजी का लिखा समग्र साहित्य प्रकाशित हुआ। उन्हीं के पास पहलीबार मैंने वीरविनोद ग्रन्थ देखा और उन्हीं के समीप बैठकर मैंने मेवाड़ के विशाल इतिहास का बोध पाया। बाद में जब इसका पुनर्मुद्रण हुआ तब भूमिका लिखते समय मुझे राजराणा की स्मृति लगातार सजग करती रही।

राजराणा ने ही डिंगल कवि नाथूदान महियारिया कृत झालामान में गुजरात के धांगध्रा के दरबार के लिखे लेख के अपने अनुवाद में सम्पूर्ण हिन्दी और केवल कत्ल जैसे उर्दू शब्द के प्रयोग की विशेषता से अवगत कराया जिससे मेरे बालमन में अनुवाद का बीजारोपण हुआ।

साण्डेश्वर महादेव के एक सुरह अभिलेख में जब मैंने राजराणा दयासिंह नाम पढ़ा तो उन्होंने बड़ी सहजता से उसका सही नाम देवीसिंह बताया। इसका असर यह रहा कि बाद में अभिलेखों के पठन में बड़ी सावधानी से उनके अर्थ करने में तटस्था का भाव रखना सीखा। उन्हें अनेक कवियों की उत्कृष्ट रचनायें कण्ठस्थ थीं। मुझे उनसे संग्रामसिंह राणावत, रामसिंह सोलंकी, तुलसीनाथ और देवकर्णसिंह राठौड़ की टणकी कवितायें सुनने का सुयोग मिला।

मेरे घर से मकवाणा (झाला) होने से कभी-कभी वे मुझे कंवरसा कहकर सम्बोधित करते। पिताश्री के निधन के बाद जब मैं उनसे मिलने ताणा पहुंचा तो उन्होंने मुझे रंग बदलने की पाग प्रदान की। प्रयाग के कुम्भ वाला प्रसंग सुनाकर रोमांचित कर दिया। वहां महाराणा भगवतसिंह और राजराणा दोनों पगड़ी धारण किये थे तब हजारों लोग उनके सम्मान में नतशिर हुए। जब इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया उदयपुर आईं तो महाराणा ने विशेष रूप से महारानी से राजराणा का परिचय कराया।

महाराणा भगवतसिंह ने जब महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन का गठन किया तो बाद में राजराणा नियंत्रक बने और बावजी चतुरसिंहजी की ग्रन्थावली के पुन: प्रकाशन की योजना बनी। अपने ठिकाने के गांव ताणा की विशेषताओं पर राजराणा ने अनेक दोहों की रचना की। एक दोहा द्रष्टव्य है-

गणराया गाठा हुआ, प्रिय लागो गिरिगांव।
पधराया जद पाल पे, अहियो ताणो गांव।।

उनसे जुड़े ऐसे अनेक प्रसंग मेरी स्मृतियों में रचेबसे हैं। मुझे अफसोस है कि उनकी बीमारी के कठिन काल में मैं उनसे मिलने नहीं जा सका। जब अचानक सुना कि हरि हंस चल्यो हरिधाम तो मन उदास होगया। ताणा में ही महासत्या पर उनका अन्तिम संस्कार हुआ तब गांवभर में हर किसी की आंखें नम थीं और उनके प्रति श्रद्धा के स्वर स्फुट थे।

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

समालोचक नवलकिशोर ने अंतिम स्वांस ली

हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक और चिन्तक डॉ. नवलकिशोर ने 16 मई को अंतिम स्वांस ली। कोरोना से संघर्षरत डॉ. नवलकिशोर 25 अप्रैल 1933 को जन्मे हिन्दी के शीर्ष समालोचक थे। साहित्यिक संगोष्ठियों और शिविरों-सेमिनारों में अपनी गंभीर ऊर्जावान बहस से चौंकाते थे। हिन्दी- साहित्य में मानववाद के पक्षधर रहते उन्होंने अनेक कृतियाँ प्रस्तुत कीं जिनमें मानववाद और साहित्य, आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता, कृति और सन्दर्भ, प्रेमचंद की प्रगतिशीलता जैसी प्रमुख हैं। वे सुखाड़िया विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी की सरस्वती सभा संचालिका के सदस्य रहे और अपने उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों-सम्मानों से अलंकृत हुए।

सम्प्रति संस्थान द्वारा आयोजित शोकाभिव्यक्ति में लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि अपने शान्त स्वभाव के कारण वे एक ठहरी हुई नदी की तरह बहते-बहाते अपनी समालोचनीय पहचान देते सदैव नवल किशोर ही बने रहे। गीतकार किशन दाधीच ने कहा कि हिन्दी-साहित्य के प्रत्येक देशव्यापी हलचल से लगातार तरोताजा रहने के लिए वे प्रतिदिन ही नियमबद्ध राजस्थान साहित्य अकादमी कार्यालय के वाचनालय तथा पुस्तकालय के प्राणवान सक्रिय पाठक बने रहे। उपन्यासकार डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर ने उन्हें अपने ढंग का मौलिक चिंतक, निष्पक्ष समालोचक तथा सजग अध्येता बताया। आलोचक डॉ. कुन्दन माली ने कहा कि हिन्दी-साहित्य में नवलजी ने मानववाद को लेकर अपनी विशेष पहचान बनाई और एक दृष्टि से लेखकों का ध्यान भी आकर्षित किया। साहित्य में उनकी ख्याति मानववाद के स्थापित प्रवक्ता के बतौर याद की जाती रहेगी। डॉ. देव कोठारी के मत में नवलकिशोर पक्के साम्यवादी चिंतक थे। उनके साहित्य में भी जगह-जगह साम्यवादी विचारों की प्रबल पक्षधरता देखने को मिलती है। चित्तौड़ के साहित्यकार शिव 'मृदुल' के अनुसार डॉ. नवलजी के मौलिक चिन्तन की धाराप्रवाह प्रस्तुति, गवेषणात्मक दृष्टि से समीक्षात्मक सारगर्भित एवं सार्थक टिप्पणियों को सुनने का अवसर मिला। वे श्रोताओं में मानसिक उद्वेलन उत्पन्न कर देते थे।, डॉ. रमेश 'मयंक' की दृष्टि में उन्होंने हिन्दी साहित्य में नवीन संप्रत्यय 'मानववाद' को विस्तृत व्याख्या, मीमांसा एवं शोधपरक विवेचना के साथ व्यापक स्वरूप प्रदान किया साथ ही पचास से अधिक शोधार्थियों का पीएच. डी. हेतु मार्गदर्शन कर उनके जीवन को संवारा। डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना एवं डॉ. तुक्तक भानावत ने उनके निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना

क्रोध : बेकाबू कोरोना

क्रोध मानव जीवन का सबसे बड़ा और सबसे भयानक विकार होकर भी सब इसे हल्के में लेते हैं तथा बमुश्किल ही छोड़ पाते हैं। कुछ लोग तो इसके बिना रह भी नहीं सकते। उनके लिए जैसे यह रामबाण नुस्खा हो किन्तु उन्हें नहीं मालूम कि यह एक ऐसी प्रचण्ड ज्वाला है जिसमें व्यक्ति स्वयं तो जलता ही, सामने वाले को भी भस्म कर देता है। रावण की प्रसिद्धि तो उसके क्रोध के कारण ही जग जाहिर है।

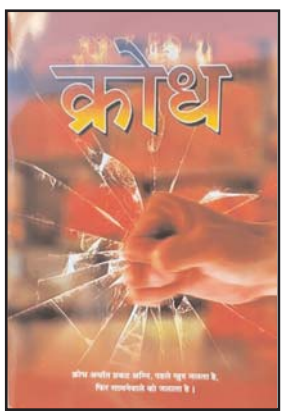

सी.ए. अरूण पितलिया ने यह 80 पृष्ठीय पुस्तक जनहितार्थ जारी कर मूल्य भी इसका 'क्रोध पर नियंत्रण करें' ही रखा। अपने प्रकाशकीय में वे लिखते हैं- 'वर्ष 2020 कोरोना के नाम रहा पर एक ऐसा कोरोना मानव के जीवन और समाज में सदियों से विद्यमान है जिस पर काबू पाने में अच्छे-अच्छों के छक्के छूट जाते हैं। यह कोरोना है क्रोध और अन्य कषाय। कई लोग तो इसे समझ ही नहीं पाते जबकि कई लोग इसे छोड़ नहीं पाते। इससे वे अपने जीवन और परिवार के सौभाग्य को घटाते कई तरह की समस्या को जन्म देते हैं।' डॉ. दिलीप धींग के सम्पादन में पुस्तक क्रोध के स्वरूप, लक्षण, प्रकार, कारण, दुष्परिणाम, चिकित्सा, दवाइयां, प्रेरक कथाएं, सूक्तियां आदि द्वारा रोचक बनाई गई है।

- काव्या मेहता

यश:पूत यशवंत कोठारी काल कवलित हुए

समाजसेवा के लिए अपना अप्रतिम योगदान देने वाले डॉ. यशवन्तसिंह कोठारी का 18 मई को निधन हो गया।

14 नवम्बर 1942 को जन्मे डॉ. कोठारी ने अपने विद्यार्थी जीवन में एग्रीकल्चर में स्नात्कोत्तर एवं डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। राजस्थान एग्रीकल्चर डिपो के माध्यम से उन्होंने कृषि क्षेत्र को लाभान्वित करने में पहचान बनाई। रोटरी क्लब की सदस्यता ग्रहण करने के बाद उदयपुर संभाग में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम की शुरूआत कर अहम योगदान दिया जिसके चलते वर्ष 2017 में वर्ल्ड रिकार्ड इंडिया में नाम दर्ज किया गया। उन्होंने मूक एवं बधिर विद्यालय की स्थापना की।

डॉ. कोठारी ने अपने 50 वर्ष के सेवाकाल में तेरापंथ मेवाड़ कॉन्फ्रेंस, तुलसी निकेतन समिति, रोटरी क्लब, भारतीय लोककला मंडल, महाराणा कुंभा परिषद, आलोक स्कूल, राजस्थान महिला विद्यालय, अंध विद्यालय, कमल क्लब, विज्ञान समिति, तेरापंथ सभा, तुलसी साधना शिखर (राजसमंद), आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान (केलवा), तुलसी अमृत विद्यालय (कानोड़) के साथ कार्य किया। इन संस्थाओं के माध्यम से उनके द्वारा किये गये उपलब्धिमूलक कार्यों से वे समय-समय पर रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय सर्वोच्च पुरस्कार सर्विस अबव द सेल्फ, वृक्षमित्र, दिव्यश्री रत्न, कला प्रेरक जैसे पुरस्कार-सम्मान से अलंकृत हुए। उनके असामयिक निधन पर विभिन्न समाजों, संस्थाओं तथा समाजसेवियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

- डॉ. इकबाल सागर

स्मृतियों के शिखर (124) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लालों में लाल एक ही लाला थे गिरधारीलाल

लाला गिरधारीलाल मेवाड़ महाराणा फतहसिंह और महाराणा भूपालसिंह के मर्जीदानों में अपनी अनेक रूपा कला-कौतुकी तथा जादुई करामात से विशेष पहचान लिये थे। ऐसे अनेक अवसर आये जब लाला गिरधारीलाल ने अपनी अद्‌भुत, अकल्पनीय और अनूठी जादूगरी से महाराणा तथा विशेष अवसरों पर उनके द्वारा आयोजित उत्सव-समारोहों में अपने कमाल द्वारा राजदरबार की शोभा बढ़ाते अनेक मान-सम्मान प्राप्त किये। यही नहीं, वहां आने वाले श्रेष्ठ स्तरीय कलाकारों को भी उन्होंने अपनी कला से चकित कर मेवाड़ का मान शत-सहस्त्र गुना बढ़ाया।

लाला के अभिन्न साथियों में सदैव छाया की तरह साथ निभाने वाले भोलेनाथ भी कम नहीं थे। वे अपने नाम के विपरीत बम भोले या कि बम गोले की करिश्माई सार्थकता लिये थे। रावजी का हाटा की एक गली में ऊंचाई पर स्थित उनके निवास पर भेंट कर बड़ी देर तक मैं उनकी वाक्‌पटुता, वाणी भंगिमा, हाजिर जवाबी, चपल मसखरी, दरबारी ठसक से इतना प्रभावित हुआ कि किस्सों पर किस्से सुनता किसी सिनेमागृह में कोई मजेदार चित्रपट सा निहारता बना रहा। वे बोलते गये-

'देखी ही नहीं, विविध भांति की जड़ीबूंटियों से आवृत्त वैद्य तारकेश्वर से भी मैं मिला। वे भी मुझे कम चमत्कारी नहीं लगे। यह उस हवेली का ही प्रभाव था कि जो भी वहां रहा, वह विविध विधा, विशिष्ट विशारद ही बन गया। तारकेश्वर भी एक संत, महात्मा, ऋषि, महर्षि की तरह ही नाना जड़ीबूंटियों के जीवनहार लगे। लगा, वे जड़ीबूंटियां जगाते हैं। उनसे बतियाते आदेश-निर्देश देते-लेते हैं। उनकी उत्पत से लेकर ऋषि-मुनियों द्वारा किये गये प्रयोगों, वेद-पुराण के समयों तथा रामायण-महाभारत काल के विशिष्ट चरित्रों द्वारा जड़ीबूंटियों के मृत्युंगयर करिश्मों के कर्मशील कोशधर हैं।'

लाला गिरधारीलाल जैसा लाला एक ही हुआ। गायन, वादन और नर्तन कला में ही नहीं, जादू पहवानी, चित्रकला आदि में भी वे बेजोड़ थे। हर फन के उत्साद थे और प्रत्येक क्षेत्र में अपना करिश्मा दिखाकर अच्छे-अच्छे गुणीजनों को चकित कर दिया। उदयपुर के जनजीवन में उनके सैकड़ों किस्से प्रचलित हैं जिनसे पता चलता है कि वे गजब की क्षमता एवं सूझबूझावाले व्यक्ति थे।

लाला के साथ सर्वाधिक समय व्यतीत करने वाले भोलानाथ सेन (89) तो यहां तक कहते कि कृष्ण तो सौलह कलाओं के अवतार थे जबकि लाला बत्तीस कलाओं में परंगत थे। उदयपुर राजदरबार में एक से एक नामी कलाकार आए। उनके प्रदर्शन के बाद लाला उनसे भी सवाया प्रदर्शन कर सबको चक्कर में डाल देते। पता नहीं इसके पीछे उनकी कौन सी साधना, शक्ति या सिद्धि थी जिसके आगे महाराणा फतहसिंह कई बार हतप्रभ रह गए।

लाला गिरधारीलाल का जन्म सलूम्बर में वहां की दरबारी गायिका सरस्वतीबाई की कोख से हुआ। बाल्यकाल के पश्चात बड़े हुजूर महाराणा फतहसिंह की सेवा में आ गए। दरबार में इन्हें सब जादूगरए कहते थे। मौके-बेमौके अपनी करामात दिखाकर सबकी वाहवाही लूटते। एक बार विश्वविख्यात राममूर्ति का आगमन हुआ। उन्होंने अपने सीने पर पांच मन का पत्थर तुड़वाया। लालाजी ने तब महाराणा से इजाजत चाही- 'हुजूर का ताबेदार हूं। मेरा भी मुलायजा हो जाय।' यह कह हाथी का बच्चा अपने सीने पर चढ़ा दिया।

एकबार पच्चीस मन लकड़ी जलाकर बड़े-बड़े अंगारों पर नाचने लगे। सभी दरबारीगण देखते रह गये। न कपड़ा जला और न पांव को आंच आई। बन्द गले का कोट पहने लाला गिरधारीलाल को न मालूम क्या सूझी कि उन्होंने अपने दोनों हाथ पीठ पीछे बंधवा दिये ऐसे कि वे हिल भी न सके। थोड़ी देर बाद देखते-देखते कोट के बटन खुले और वह हाथ से निकल पास रखे मेज पर आ गया।

अमल के कांटे से जुड़े सत्यनारायण मन्दिर क्षेत्र में नुक्कड़ की एक हवेली है जिसमें कई चमत्कारी और सिद्ध लोग उपासना करते रहे। इसी हवेली में भूराजी बावजी रहते थे जो नामी सिद्ध थे। तब यह हवेली भी उन्हीं के नाम से जानी गई। उसके बाद भूराजी का ही चेला सुगनजी रहा।

सुगन के बाद गिरधारीलाल रहे जिन्हें सब 'लाला' कहते और यह हवेली भी लाला गिरधारीलाल की हवेली के नाम से मशहूर रही। यहां सभी तरह के लोगों का जमावड़ा रहता। सीखने वाले भी बने रहते। राजनर्तकियां गायिकाएं भी तालीम पातीं। बाद में वैद्य तारकेश्वर यहां रहे जो जड़ीबूंटियों के जानकार और उन्हें जगाने वाले चमत्कारी प्रयोगी थे। कई तरह के अजीबोगरीब जड़ीबूंटियां यहां फलती-फूलती संग्रह पाती मैंने देखीं। मेरा वैद्यजी से भी खासा परिचय रहा।

किस्सेबाज भोलेनाथ ने बताया कि ध्रुपद धमार के पहुंचे हुए गायक जाकरूद्‌दीन खां साहेब की पाटदार आवाज जिसने भी सुनी वह उन्हें कभी विस्मृत नहीं कर सका। यहां उन्हें सुन विष्णुनारायण भातखंडे ऐसे चकित हुए कि छह माह उदयपुर रहे और प्रतिदिन उन्हें सुनने जाते। घर आकर विष्णुजी जो कुछ सुनते उसका रियाज करते और सारी गायकी, अलाप एवं शब्द को नोटकर नोटेशन बना तानपुरे के साथ बिठाते।

लाला गिरधारीलाल ने भातखंडे की यह चतुराई पकड़ ली और जाकरूद्‌दीन खां साहब को जाकर

कहा कि आपकी सारी गायकी पं. विष्णु ने अपने गले बिठा ली है। जो कुछ गाते हो, आरोह, अवरोह सहित पंडत विष्णु गा लेता है जो तुम्हारे यहां झाड़ू लगाता है, वह तो तुम्हारा गुरु निकला।

जकरूद्‌दीन खां को अचंभा हुआ कि ऐसा कैसे हो सकता है। यह असम्भव है। तब लाला उन्हें अपने साथ खेरादीवाड़ा ले गये और नीचे चबूतरी पर बैठ हू-ब-हू गाना सुना तो जाकरूद्‌दीन की अक्ल ने काम करना बन्द कर दिया। दूसरे दिन नित्य की तरह जब विष्णुजी वहां पहुंचे तो खां साहेब ने उन्हें डांटा। बुरी तरह झिड़का और अपने बैठकखाने से बाहर निकाल दिया।

एकबार थिरकबा नामक एक मशहूर तबलिया आया। उसका तबला सुनने के लिए गौहर लाला को ले गई। थिरकबा ने तब उन्हें सुनाने को ना कह दिया। लाला गिरधारी भी कम करामाती नहीं थे। हाथ का इशारा कर दिया कि थिरकबा के दोनों हाथ तबलों पर चिपक गये।

वे ऐसे चिपके रहे कि हाथ खींचने पर भी नहीं छूटे। गौहर तब गिड़गिड़ाई और लालाजी को अपनी करामात समेटने की गुहार की। लालाजी ने तब जोर से कहा- 'तबला छूट जा।' उनके यह कहते ही थिरकबा के हाथ तबले से छूट पड़े। थिरकबा ने लालाजी के पांव पकड़े और अपने दोनों कान भी कि ऐसी भूल नहीं होगी और उसके बाद जी भर कर गिरधारीलाल उसका तबला सुनते रहे।

इसी प्रकार एक कत्थक नर्तक आया। उसने बड़े कमाल का कत्थक दिखाया। बाद में उसी के घूंघरू पहन लाला गिरधारीलाल मंच पर आये और जितने बोल कत्थक के निकाले गये उससे अधिक लाला ने मात्र अपने अंगूठे से निकाल दर्शकों को स्तंभित कर दिया।

उस समय गिरधारीलाल की उम्र बीस वर्ष थी। महलों के बड़े चौक में एकबार लालाजी ने एक कबूतर पकड़ कर उसकी गर्दन काट दी। इस पर महाराणा फतहसिंह बड़े खफा हुए। उसे हत्यारा कहा और सख्त नाराजगी जाहिर की। लाला दरबार के पास हाजिर हुए और 'गुस्ताखी माफ हो' कहकर लकड़ी घुमाते हुए कबूतर की गर्दन को जोड़ उड़ा दिया।

लेकिन वह घटना तो भोलेनाथ कभी भूल नहीं पायेंगे जिसे याद कर आज भी उनका कलेजा कांप उठता है। एक रात करीब ढाई बजे लाला गिरधारी रावजी का हाटा स्थित उनके निवास पर आये। हड़बड़ाते भोलेनाथ उठे। लाला बोले- 'कमीज पहन और चल मेरे साथ।' वे इन्हें कब्रिस्तान ले गए। अब तो वह पूरा क्षेत्र ही बस्तीमय है। उन्हें एक जगह बिठा दिया और वे जमीन खोदकर गर्दन समेत सिर निकाल लाये। संध्या को भोलेनाथ की दुकान पर वह सिर लाकर टेबल पर रखा और उसे एक लाल कपड़े से ढंक दिया। राह चलते एक व्यक्ति को बुलाया और कहा, अपने पिता को आवाज दो, अभी बोलेगा। उसने अपने मृत्यु प्राप्त हुए पिता को आवाज लगाई तो टेबल पर रखे करिश्मे से ठीक वैसी ही आवाज निकली। उसका पिता बोला, बेटे अच्छे तो हो।

यह देख-सुन वहां खासी भीड़ एकत्र हो गई। उस दिन लाला ने कोई 25-30 लोगों को अपने मृत पिता की वाणी का अजूबा दिया। ऐसे एक से एक किस्से-करतब-कौतुक का खजाना लिए भोलानाथ महाराणा भूपालसिंह के समय के लाला के किस्सों का भी आस्वाद पाए हैं। ध्रुपद, धुमार, ख्याल, टप्पा से लेकर कठिन से कठिन कोई राग-रागिनी ऐसी नहीं जिसे गाकर गिरधारीलाल ने बड़े से बड़े तीसमारखां गायक को चमत्कृत नहीं किया हो।

ऐसा कोई नर्तक नहीं जिसके नाच को हू-ब-हू अपने में लाकर गिरधारीलाल ने दरबार और दरबारियों के समक्ष मेवाड़ का मस्तक ऊंचा नहीं रखा हो। क्या सारंगी, हारमोनियम, तबला, सितार, गिटार जो भी हाथ आता उसमें अपना रंग सवाया किये रहते। कभी कुछ नहीं होता तो हाथ में पत्थर रखकर उन्हें भी बजाकर अद्‌भुत समा बांध देते। एकबार दोनों तरफ तूम्बे वाली एक सितार लाए और गज की बजाय पत्थर की रगड़ाई देकर खूबसूरत रागें निकालीं।

लाला गिरधारीलाल ने अपने जादुई करिश्मों से कई बड़े-बड़े लोगों को चमत्कृत किया। कलकत्ता, मुम्बई जैसे महानगरों में भी उन्होंने कई प्रदर्शन दिये। अंग्रेजों ने भी उनके प्रदर्शनों की न केवल प्रशंसा की अपितु कई सारे मेडल भी सम्मान स्वरूप प्रदान किये। ऐसे एक हजार के करीब मेडल उनके कोट पर तारों से झिलमिलाते आकाश की तरह चमचमाते शोभित होते रहे।

आर्य समाज के बैनर तले संगीतप्रेमी पन्नालाल 'पीयूष' भी गिरधारीलाल के अच्छे सम्पर्क में आये। पीयूषजी लाला को अजमेर आर्य समाज की हीरक जयंती पर ले गये। वहां इनका व्यायाम का बड़ा सफल प्रदर्शन रहा।

एक वर्ष बाद सन् 1934 में इन्दौर में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भी वे लालाजी को ले गये। यहां सियारामशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, बच्चन जैसे ख्याति प्राप्त कवियों की उपस्थिति थी परन्तु कवि सम्मेलन की अध्यक्षता को लेकर कवियों में मतभेद हो गया तब बच्चनजी रूठकर इन्दौर कॉलेज चले गये और वहां सम्मेलन किया।

इधर महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन हुआ जहां महात्मा गांधी, जो साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष थे के समक्ष पीयूषजी ने 'मेरी जान रहे, मेरी शान रहे' गीत सुनाया और गांधीजी से आशीर्वाद लिया। लाला गिरधारीलाल भी इस सम्मेलन में अपने को छिपा नहीं सके। उनके जादुई संगीत और तालकारी ने सबको विमोहित किये रखा। लाला गिरधारी अच्छे नाटककार एवं चित्रकार भी थे। महाराणा भूपालसिंह के समय वे गुणीजनखाने के हाकिम रहे।

उदयपुर में अशोकनगर स्थित निवास पर मैं पीयूषजी से भी मिला। आर्य समाज के माध्यम से उन्होंने अनेक स्थानों की यात्रा कर बड़े-बड़े सम्मेलनों में अपनी सांगीतिक प्रस्तुति का प्रभाव दिया।

देश की अनेक विशिष्ट ख्यात-प्रख्यात विभूतियों के सान्निध्य में रहकर उन्होंने जो कुछ अर्जित किया उसके अनेक किस्से सुनाकर आनन्द की विशेष खोह उतरते मैंने उन्हें कई बार देखा। 'मेरी जान रहे, मेरी शान रहे' गीत तो यहां आयोजित संगीत समारोहों में गहरी तन्मयता में डूबकर अपनी गायकी से श्रोताओं को रस स्तब्ध करते सुना। अब तो वह संसार जैसे अतीत व्यतीत का विराम ही हो गया।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 जून 2021

सम्पादकीय

कोरोनाकाल में सजग चेतना

कोरोना काल में मनुष्य मास्क लगाने में उसी तरह अभ्यस्त हो गया जैसे घोड़ा अपने मुंह में लगाम और बैल अपने नाक में नाथ का अभ्यस्त हो जाता है। घोड़ा और बैल को एकबार लगाम-नाथ लग जाती है तो ताजीवन रहती है। मनुष्य इन्हें अपने अधीन रखने के लिए लगाता है।

मास्क की उपयोगिता कोरोना से बचाव के लिए है जो मुंह और नाक दोनों को ढकता है। इसका मकसद है कोरोना वायरस मुंह और नाक के जरिये शरीर में न पहुंचे। कोरोना मनुष्य के शरीर में पहुंचकर फेफड़े पर असर करता है जिससे धीरे-धीरे श्वसनतंत्र बुरी तरह गड़बड़ा जाता है। वाणी अवरूद्ध हो जाती है और अन्ततः मनुष्य मृत्यु का ग्रास बन अपनी इहलीला समाप्त कर बैठता है।

जब कोरोना ने हमारे देश में दस्तक दी तब उसका एकमात्र बचाव सावधानी थी। तब मुंह पर मास्क जरूरी और दो गज की दूरी एक नारा सा बन गया था। मुंह को ढकने का स्वप्न में भी किसी ने नहीं सोचा था सो बड़ा अटपटा लगता था। इसके लगाने से स्वांस ठीक से नहीं ली जा सकती थी और न ठीक से बोला ही जा सकता था इसीलिए प्रारम्भ में यह फैलते-फैलते जितना फैला उतना ही डर पैठ गया। ऐसा डर कि दूर रहने वाले को हो जाता तो हमारी बस्ती को भी बन्दकर ताला लगा दिया जाता। ऐसी स्थिति में पहलीबार लॉकडाउन शब्द सुनने को मिला। अब तो यह ठेठ गांवों तक की जबान पर चढ़ गया।

ऐसा करने से कोरोना कंट्रोल में आया पर तक तक गांव स्वस्थ थे। वहां तक कोरोना की शहरी लाय नहीं पहुंची थी। इसका दुष्परिणाम यह रहा कि गांवों के लोग स्वच्छन्द ही रहे। उन्होंने खुलकर ब्याह रचाये। खुलकर मृत्युभोज किया। खुलकर प्रीतिभोज किये। खुलकर शवयात्राओं में भाग लिया। खुलकर दूसरे-तीसरे संस्कार किये जिससे वहां भी कोरोना ने जाकर हायतौबा मचा दिया। सब अचानक होने से सरकारी व्यवस्थाएं बुरी तरह गड़बड़ा गई, चरमरा गई। ऐसे में कई ऐसे बिचौलिये, दलाल और व्यवस्था हलाल अपनी जेबें भरने के लिए बरसाती कुकुरमुक्ता की तरह नजर आये जिन्होंने नर पिशाची की सारी हदें पार कर दीं।

ऐसी स्थिति में बीमारों की संख्या के साथ मौतों की संख्या भी बढ़ती गई। अस्पतालों में जगह नहीं रही। टीके कम पड़ गये। दवाइयों की किल्लत हो गई। श्मशानों में मरीजों की कतारें लग गईं। पानी में शव बहाये जाने लगे। तब लॉकडाउन में कठोर सख्ती की गई। बढ़ाचढ़ाकर फाइन लगाये गये।

अब जाकर कोरोना के लगाम लगी है। नाथ लगी है। डाटी लगी है। इससे मरीजों की संख्या भी घटी है। क्रमशः घट रही है। घरों से बाहर जो भी निकल रहे हैं, मास्क लगाने के अभ्यस्त हो गये हैं। महिलाएं भी बिना मास्क नजर नहीं आतीं यहां तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी छोटे-छोटे मास्क लगाकर हंसते-कूदते-मुस्कुराते अच्छे लगते हैं।

कानोड़ में भाणावत ट्रस्ट का उल्लेखनीय योग

सामंतीकाल में मेवाड़ राज्य का प्रमुख ठिकाना रहा कानोड़ गांव शिक्षा नगरी के नाम से पहचान लिए है। यहां से शिक्षित अनेक व्यक्ति देश-विदेश में अपना नाम रोशन किये हैं। आजादी के लिए संघर्ष करने वालों में सर्वाधिक तेरह स्वतंत्रता सेनानी यहीं के थे।

यहीं के शिक्षक प्रतापसिंह भाणावत ने अपनी पत्नी तथा अपने संयुक्त नाम से दिसम्बर 2014 में सुशीला-प्रतापसिंह भाणावत चेरिटेबल ट्रस्ट का शुभारम्भ कर शिक्षा-समाजसेवा के क्षेत्र में नेक कार्य प्रारम्भ किया। अपने समय में प्रतापसिंहजी ने विभिन्न स्कूलों में जरूरतमंद बालकों को स्कूली पोशाक, पुस्तकें तथा कॉपियां वितरित कीं। प्रतिदिन धार्मिक आचरण, नेमनियमपूर्वक धर्माराधना करने वाली महिलाओं का सम्मान करते सहयोग प्रदान किया।

वर्तमान में उनके सुयोग्य पुत्र नरेन्द्रसिंह एवं डॉ. शूरवीरसिंह ने अपनी मातुश्री के परामर्शानुसार कानोड़ में कोरोना पीड़ितों तथा उनके सेवादारों के लिए दोनों समय अन्नपूर्णा की व्यवस्था प्रारम्भ की। डॉ. शूरवीर ने बताया कि यह व्यवस्था वहीं के समाजसेवी पारस नागोरी पूर्णतः सेवाभावना से संभाले हुए हैं। यह सेवाकल्प 11 मई से सुचारू जारी है। सुशीलादेवी की इच्छा है, यदि यह व्यवस्था ठीक रही तो वहीं स्थायी रूप से असक्तों को भोजन सुलभ कराने का मन है।

- दिनेश कुदाल

कोरोना : दो प्रतिशत बीमारी, सौ प्रतिशत भयग्रस्त

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

भारत में यों तो बीमारियों, दुर्घटनाओं और वृद्धावस्था के कारण मरनेवालों की संख्या 25 हजार रोज की है। उसमें यदि चार-पांच हजार ज्यादा जुड़ जाएं तो यह दुखद तो है लेकिन कोई भूकम्प-जैसी बात नहीं है। यों तो दो प्रतिशत लोगों को यह बीमारी हुई है लेकिन सौ प्रतिशत लोग इससे डर गए हैं। इस डर ने भी कोरोना को बढ़ा दिया है।

भारत जबसे आजाद हुआ है, कोरोना-जैसा संकट उस पर कभी नहीं आया। इस संकट ने राजा-रंक, करोड़पति-कौड़ीपति, औरत-मर्द, शहरी-ग्रामीण, डॉक्टर-मरीज किसी को नहीं छोड़ा। सबको यह निगल गया। श्मशानों और कब्रिस्तानों में लाशों के इतने ढेर देश में पहले किसी ने नहीं देखे। भारत में यों तो बीमारियों, दुर्घटनाओं और वृद्धावस्था के कारण मरनेवालों की संख्या 25 हजार रोज की है। उसमें यदि चार-पांच हजार ज्यादा जुड़ जाएं तो यह दुखद तो है लेकिन कोई भूकम्प-जैसी बात नहीं है लेकिन सरकारी आंकड़ों पर हर प्रान्त में सवाल उठ रहे हैं। देश में ऐसे लोग अब मिलना मुश्किल है, जिनका कोई न कोई रिश्तेदार या मित्र कोरोना का शिकार न हुआ हो।

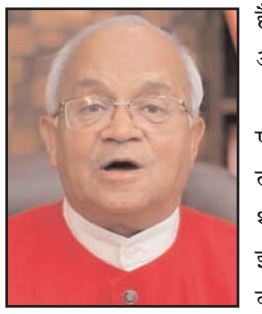

यों तो भारत के दो प्रतिशत लोगों को यह बीमारी हुई है लेकिन सौ प्रतिशत लोग इससे डर गए हैं। इस डर ने भी कोरोना को बढ़ा दिया है। मृतकों की संख्या अब भी रोजाना 4 हजार के आसपास है लेकिन मरीजों की संख्या तेजी से घट रही है। संक्रमण घट रहा है और संक्रमित बड़ी संख्या में ठीक हो रहे हैं। यदि यही रफ्तार अगले एक-दो हफ्ते चलती रही तो आशा है कि हालात काबू में आ जाएंगे।

15-20 दिन पहले जब कोरोना का दूसरा हमला शुरु हुआ था तो आक्सीजन, इंजेक्शन और पलंगों की कमी ने देश में कोहराम मचा दिया था। कई नर-पिशाच कालाबाजारी पर उतर आए थे। निजी अस्पताल और डॉक्टरों को लूटपाट का अपूर्व अवसर मिल गया था लेकिन सरकारों की मुस्तैदी, लोकसेवी संस्थाओं की उदारता और विदेशी सहायता के कारण अब सारा देश थोड़ी ठंडक महसूस कर रहा है लेकिन चिंता अभी कम नहीं हुई है। राज्य-सरकारें कोरोना के तीसरे हमले के मुकाबले के लिए कमर कस रही हैं। दिल्ली और हरियाणा की सरकारों ने हताहतों के सम्बन्ध में कई अनुकरणीय कदम उठाए हैं। केंद्र और राज्यों ने पहले हमले के समय की गई लापरवाही से कुछ सबक सीखा है लेकिन हमारे राजनीतिक दलों के नेतागण अभी भी एक-दूसरे की टांग खींचने में लगे हुए हैं। वे यह नहीं सोचते कि वे अपने विरोधी की जगह होते तो क्या करते? यदि केंद्र में भाजपा की सरकार है तो लगभग दर्जनभर राज्यों में विरोधियों की सरकारें हैं। कोरोना के पहले दौर के बाद क्या उन्होंने कम लापरवाही दिखाई?

अब यदि उनके **नेता कहते हैं कि कोरोना का यह दूसरा हमला 'मोदी हमला' है तो ऐसा कहकर वे अपना ही मज़ाक उड़ा रहे हैं। भाजपा के प्रवक्ता भी विरोधी नेताओं के मुँह लगकर अपना समय खराब कर रहे हैं। यह समय युद्ध-काल है। इस समय हमारा शत्रु सिर्फ कोरोना है। उसके खिलाफ पूरे देश को एकजुट होकर लड़ना है।** देश के लगभग 15 करोड़ राजनीतिक कार्यकर्त्ता, 60 लाख स्वास्थ्यकर्मी और 20 लाख फौजी जवान एक साथ जुट जाएं तो कोरोना की कमर तोड़ना आसान होगा। डर के बादल छंटे तो आशा की किरण उभरे।

अमेरिका में हालात सामान्य हो रहे हैं

मैंने अमेरिका में मास्टर्स की डिग्री लेने शिकागो के यू आई सी विश्वविद्यालय में जुलाई 2019 में दाखिला लिया। अब मैं डिग्री लेकर शिकागो में मैनेजर का जॉब कर रहा हूं। अध्ययन के दौरान यहां पर भी कोविड-19 के कहर का सामना करना पड़ा।

लॉकडाउन में घर पर ही रहना पड़ा। अब यहां पर हालात सामान्य हो रहे हैं। पिछले सप्ताह ही राष्ट्रपति जो बाईडेन ने मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग की अनिवार्यता को समाप्त करने की घोषणा की जिससे मैं और मेरे मित्र भी मास्क फ्री मुस्कान से रह रहे हैं और हमें मास्क की आजादी मिली है।

मैंने और मेरे सभी मित्रों ने वैक्सीन की दोनों डोज लगवा ली है। यहां पर 46 प्रतिशत को एक डोज व 36 प्रतिशत को दोनों वैक्सीन की डोज लग चुकी है। मई माह के प्रारम्भ तक 38.5 प्रतिशत पुरुषों ने जबकि 43.5 प्रतिशत महिलाओं ने वैक्सीन लगवाई है।

यहां वैक्सीनेशन टीका लगवाने के लिए बचत बॉण्ड, लंच से लेकर सिनेमा, स्पोर्ट्स टिकिट तक फ्री दिये जा रहे हैं। वैक्सीन लगवाओ 7.35 करोड़ का लॉटरी जैकपोट भी जीतो। अब यहां हालात सामान्य हैं। जिम, रेस्टोरेंट, होटल, सिनेमा, मॉल, बाजार सभी खुल चुके हैं।

- शिकागो से विकल्प मेहता

रसिकलाल एम. धारीवाल पब्लिक स्कूल में सत्र 2021-22 हेतु निःशुल्क शिक्षा

उदयपुर। श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक शिक्षा सोसायटी, उदयपुर के ट्रस्टीगण की ऑनलाइन वर्चुअल मीटिंग में महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि जिन बच्चों के अभिभावकगण की कोरोना से मृत्यु हो गई है या परिवार ने कमाने वाले व्यक्ति को खो दिया है, उन सभी बच्चों को सोसायटी द्वारा संचालित चित्रकूटनगर स्थित रसिकलाल माणिकचन्द धारीवाल पब्लिक स्कूल में सत्र 2021-22 में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी।

सोसायटी के मानद सचिव गजेन्द्र भंसाली ने बताया कि सोसायटी द्वारा चित्रकूटनगर में सीबीएसई से मान्यता प्राप्त अंग्रेजी माध्यम विद्यालय संचालित है। इसमें संपूर्ण सुविधा के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है। अध्यक्ष राज लोढ़ा ने बताया कि शिक्षा से बड़ा कोई दान नहीं हो सकता है। अतः सभी ट्रस्टीगण ने मिलकर यह निर्णय लिया है कि कोरोनाकाल में जिन-जिन बच्चों ने अपने अभिभावकों को खो दिया है, उनके लिए सभी ट्रस्टी एवं स्कूल के शिक्षक अभिभावक की भूमिका अदा करेंगे। ऐसे बच्चों का दाखिला प्राचार्या श्रीमती कुमुद निगम से संपर्क कर करवाया जा सकेगा। इस मौके पर उपाध्यक्ष आर. के. चतुर, प्रो. अनिल कोठारी, कुलदीप नाहर उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा में अशोकजी की स्मृति

मूलत: बड़ीसादड़ी किन्तु कोटा में स्थायी रूप से रहते स्व. लक्ष्मीलालजी जारोली के सुपुत्र अशोकजी का 26 मई को असामयिक निधन हो गया। वे अपने साथ माता सोबाकबाई, पत्नी रीना, पुत्र निखिल, बहू दीक्षा तथा पुत्री सलोनी का कर्मठ, कर्मशील संस्कारी परिवार लिए थे।

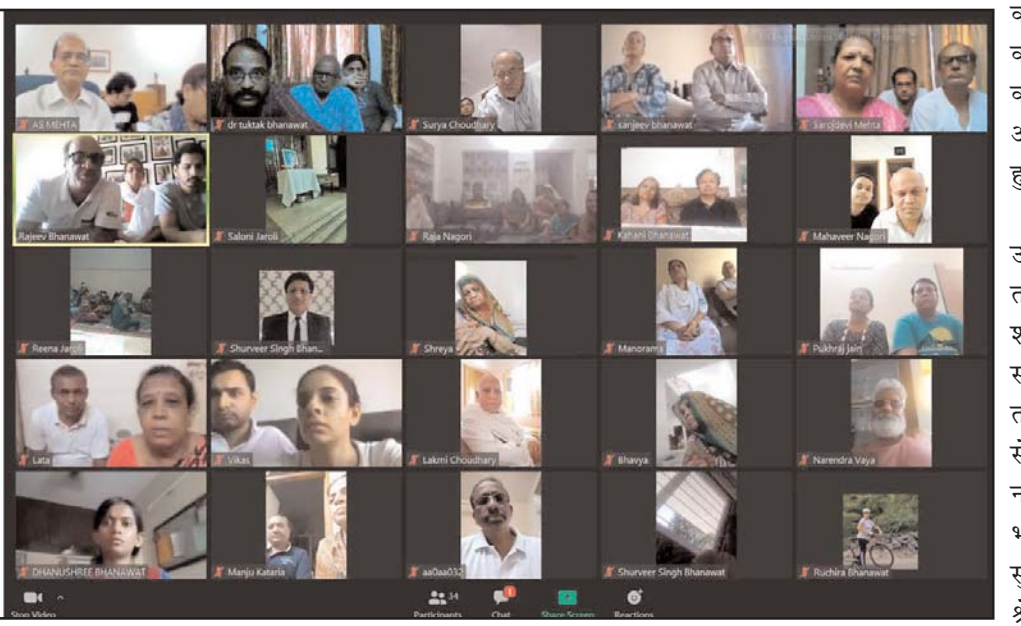

उनकी स्मृति में 28 मई को जूम एप के जरिये श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई जिसमें परिजनों ने उनकी उपलब्धियों का लेखांकन किया। संयोजन डॉ. संजीव भानावत ने किया।

दिल्ली से तृप्ति-अमरसिंहजी मेहता तथा भव्य ने कहा कि दूसरों की मेहमाननवाजी कोई उनसे सीखे। वे हर समय आतिथ्य सत्कार में पलक पांवड़े लिए तत्पर रहते थे। शौकीन मिजाज के साथ अच्छा खाना-पीना, रहना, पहनना और करीने से जीवन जीना उनकी खुशमिजाजी में अहम था।

उदयपुर से डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा, किडनी, शूगर, बी. पी., हरनिया, पाइल्स जैसी बीमारियां रहते भी उन्होंने कभी हार नहीं खाई और अपना आत्मबल शेरे बनाये रखा। एक तरह से वे मृत्युजीवी थे परन्तु कोरोना की चपेट ने उन्हें भी गंधी दे दी जिससे वे बेसमय कालग्रसित हुए।

मुम्बई से राजीव-रेखा भानावत बोले, भव्येश-हेतल के विवाह में रीना-अशोकजी ने बड़े उत्साह-उल्लास से शरीक हो हमारी शोभा बढ़ाई और सभी ने मिलकर खुशियां बांटी। उनके साथ कालूलालजी-सरोज, विशाल-लीना मेहता, श्रीपाल-मनोरमा तथा मयंक नाहर, नीलेश-विजेता भद्रा ने भाग लिया।

बीकानेर से कविता-डॉ. सतीशजी मेहता और बहू अनिशा ने कहा, वे शिकागो में विकल्प की पढ़ाई की जानकारी लेते हमें प्रेरित करते रहते कि उसकी भणाई में हर सम्भव सहयोग करते रहें और जब उसने वहीं जोब शुरू किया तो बोले, माता-पिता की सबसे बड़ी धरोहर अपने पुत्र को हीरे की तरह तराशकर रत्न बनाना है। यहीं से रूद्ध गले से रीना की माता सुधा नागोरी बोली, विज्ञान में उच्चशिक्षा के बावजूद रीना ने नौकरी नहीं कर पूरे परिवार की सेवा-सुश्रुषा का दायित्व सम्भाल वाहवाही ली। अशोकजी को अपनी किडनी दी। महीने-महीने भर नड़ियाद रह माकूल इलाज कराया। अमिताभ-कल्पना बोली, तन-मन से तो दीदी सेवा में लगी रहीं पर धन खर्ची का भी हाथ सदा खुला रखा। प्रमोद-अनिता ने कहा, शरीर नश्वर है सो व्यक्ति तो चला जाता है पर इस चलाचली के खेल में स्मृतियां रह जाती हैं जो सालती रहती हैं। उनके साथ राजा, जिनेश, वैभव भी उपस्थित रहे।

उदयपुर से डॉ. तुक्तक-रंजना ने कहा, इलाज के लिए दीदी को कईबार नड़ियाद जाना पड़ा। उदयपुर से गुजरते हम उनसे भेंट करने हाईवे चले जाते। दो-एकबार तो उन्होंने शहर में थोड़ी देर के लिए ही सही, बड़ी भुआजी सोवनबाई (98), भाणजी उमरावबाई तथा बहिन डॉ. कहानी-जितेन्द्रजी मेहता एवं बच्चे काव्या, युक्ता, शब्दांक, अर्थांक से भलीप्रकार मिलकर गंतव्य पकड़ा। सचमुच में वे मृत्युंजय अ-शोक ही थे।

जयपुर से डॉ. संजीव-कौशल्या, स्वस्तिक-सोनाली एवं धनुश्री भानावत बोले, सच है, सीखने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। अपने आसपास ही अच्छाइयों का लड़ालूम है। बस, केवल दृष्टि चाहिए। कोटा में निखिल-दीक्षा का विवाह पूरे परम्परागत रीति नेगचारों के साथ किया गया उनके हाथों पहला विवाह था। सभी दूर-सुदूर के समधियों को आमंत्रित कर उन्होंने जो उमंग उल्लास और गाजाबाजा कर सीख-सीखावण तक की मांगलिक विधियां पूरी कीं वे सचमुच में अभूतपूर्व यादगार ही बनी हुई हैं।

इनके अलावा उदयपुर से रूचिरा-अनूप तथा विहान गुप्ते, डॉ. शूरवीर-कल्पना भाणावत, सोहनलालजी-कलादेवी तथा नरेन्द्र वया, जोधपुर से प्रकाश-सुमित्रा नागोरी, नरेश-रंजु नागोरी, भीलवाड़ा से महावीर-सुनीता तथा वीतराग, श्रेया, भव्या नागोरी, लता-फतहसिंहजी मेहता, उमरगांव से डिंपल-राजेश भद्रा, इंग्लैण्ड से पारूल-प्रणय, समर्थ, उर्वी, प्रभात, सिंगापुर से भव्या-विकास गेलड़ा एवं जावद से सुन्दरलाल चौधरी ने अपनी उपस्थिति तथा वैचारिक योगदान से अशोकजी के प्रति श्रद्धा-भाव व्यक्त करते परमपिता परमेश्वर से मृतात्मा को शान्ति तथा परिवारजनों को असह्य दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

-प्रो. संजीव भानावत

स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने का यह उपयुक्त समय

-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत-

यह समय न तो राजनीति करने का है और न ही आपसी मनमुटाव को सक्रिय करने का।
केंद्र सरकार को इस विपत्ति के समय अपने दायित्वों से हाथ नहीं छीटकना चाहिए।
सरकार को युद्ध स्तर पर सबसे बड़ी प्राथमिकता मानते हुए वैक्सीनेशन का काम करना चाहिए।

कोविड-19 महामारी ने संपूर्ण विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। विकासशील राष्ट्रों के साथ-साथ विकसित राष्ट्रों की स्वास्थ्य सुविधाएँ भी इस महामारी के आगे दम भरने लगी हैं।

भारत में जो मौत का मंजर देखने को मिला उससे इंसानियत भी शर्मसार हो गयी है। यहां दवाइयों की कमी, ऑक्सीजन की कमी, वॉर्ड एवं आईसीयू में बेड की कमी, डॉक्टरों की कमी और तो और श्मशान घाटों तक की भी कमी महसूस हुई। इससे हमारी संपूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली धराशायी हो गई।

देखा जाय तो हमारे यहां पहले से ही स्वास्थ सुविधाओं की कमी है। ऊपर से अचानक मरीजों की संख्या बढ़ने से अस्पतालों की कमर टूट गयी है। यह तो इंसान की फितरत है कि जब समस्या आती है तब ही उसका गहराई से विश्लेषण करते हैं और फिर शांत हो जाते हैं। भारत सरकार को इसे अवसर के रूप में देखना चाहिए और पूरी शक्ति के साथ देश की स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करना चाहिए।

यह समय न तो राजनीति करने का है और न ही आपसी मनमुटाव को सक्रिय करने का। केंद्र सरकार को इस विपत्ति के समय अपने दायित्वों से हाथ नहीं छीटकना चाहिए। आज सरकार को युद्ध स्तर पर सबसे बडी प्राथमिकता मानते हुए वैक्सीनेशन का काम करना चाहिए।

टीकाकरण के लिए केंद्र सरकार ने बजट में 35000 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। इस राशि का उपयोग पूरे देश में मुफ्त टीकाकरण के लिए करना चाहिए। देश में 12 वर्ष से ऊपर की आबादी लगभग 109 करोड़ है। यदि इन सबको वैक्सिन के दो डोज दिये जाए तो 218 करोड़ डोज की आवश्यकता होगी।

केंद्र सरकार वर्तमान में 150 रूपये प्रति टीका खरीद रही है। ऐसी स्थिति में देश के सभी नागरिकों के टीकाकरण के लिए उसे 32,700 करोड़ रूपये की आवश्यकता होगी। यह समझ से परे है कि सरकार टीकाकरण से अपने हाथ क्यों खींच रही है और इसका दायित्व राज्यों पर क्यों हस्तांतरित करना चाह रही है?

वैक्सिनेशन के लिए बजट प्रावधान करते सरकार ने खूब तालियां बटोरी थीं। राष्ट्रीय आपदा के इस समय केंद्र सरकार की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि देश के सभी नागरिकों को टीकाकरण किया जाए।

जब से ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना फैला है देश के स्वास्थ्य ढांचे की पोल खुलकर सामने आ रही है। ऐसी स्थिति में शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य का ढांचा विकसित करना होगा। हमारे पास प्रत्येक 10,000 की जनसंख्या पर केवल 0.928 डॉक्टर तथा 1.7 नर्सेज हैं। दक्षिण भारत एवं शहरी क्षेत्रों में डॉक्टर एवं अस्पतालों की बहुलता है वहीं उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों तथा ग्रामीण इलाको में डॉक्टरों एवं अस्पतालों की अत्यंत कमी है।

सरकार को पूंजीगत प्रावधान को तीव्र गति से खर्च करना चाहिए। इस प्रावधान से पूरे देश में 50 अस्पतालों का निर्माण किया जा सकता है। समाज के निम्न तबके को भारी नुकसान हो रहा है। उसके पास खर्च करने के लिए पैसा नहीं है। नौकरियां चली गई हैं। बाजार में मांग में कमी आई है। छोटे-मझले उद्योग समापन के कगार पर खड़े हैं। ऐसी स्थिति में स्वास्थ्य-सेवा पर सरकार पूंजीगत खर्च बढ़ाती है तो न केवल मांग सृजित होगी, रोजगार बढ़ेगा। स्वास्थ्य-सेवाओं का आधारभूत ढांचा भी मजबूत होगा। सरकार को अपना खर्च तेजी से बढ़ाना होगा जिससे गिरती हुयी अर्थव्यवस्था पटरी पर आ सके।

मिर्गी का दवाओं से उपचार संभव

उदयपुर (वि.)। सीजर जिसे सामान्य भाषा में मिर्गी अथवा ताण कहा जाता है, मस्तिष्क का एक विकार मात्र है। इसमें न्यूरोनल सर्किट्स में असामान्य उत्तेजना होने के कारण प्रभावित मरीजों को मिर्गी का दौरा पड़ता है। इसमें सामान्यतया जीभ का कटना एवं मल मूत्र का स्वत: ही त्याग हो जाता है और ऐसी घटनाएं मरीज को याद भी नहीं रह पाती है। यह बात पारस जे के हॉस्पिटल में न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. मनीष कुलश्रेष्ठ ने कही।

उन्होंने बताया कि मिर्गी कई प्रकार की होती है। कई दौरों के दौरान मरीज की चेतना चली जाती है। मिर्गी के कारण मरीज का जीवन सामाजिक, आर्थिक व मानसिक रुप से प्रभावित होता है। इसीलिए समय रहते इसका उपचार व निदान कराना आवश्यक हो जाता है। मिर्गी का पता लगाने के लिए कुछ सामान्य जांचों के अलावा मस्तिष्क का एमआरआई व ईईजी किया जाता है तथा उसके आधार पर ही मिर्गी के प्रकार का पता लगाया जाता है। उचित उपचार मिलने पर 70 प्रतिशत मामलों में दवाओं द्वारा ही मिर्गी का उपचार किया जा सकता है।

बाजार / समाचार

उदयपुर का पहला निशुल्क कोविड ऑइसोलेशन सेंटर प्रारंभ

उदयपुर (वि.)। जीतो उदयपुर द्वारा निशुल्क कोविड ऑइसोलेशन सेंटर प्रारंभ किया गया। इसमें रोगियों के रहने, खाने-पीने के साथ ही डॉक्टर्स, नर्स एवं अन्य सेवादारों की सेवाएं हर समय निशुल्क उपलब्ध रहेंगी।

जीतो के चैयरमेन राजकुमार सुराणा ने बताया कि इसके लिए अनिल नाहर एवं यशवंत आंचलिया के नेतृत्व में अनिल मेहता, राजीव पोरवाल, राजेश खमेसरा एवं गुणवंत वागरेचा की कमेटी गठित की गई है। मुख्य सचिव कमल नाहटा, वाइस चेयरमेन संदीप मारू तथा कोषाध्यक्ष राजेन्द्र जैन, अर्जुन खोखावत, आलोक पगारिया, तुषार मेहता की उपस्थिति में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि नगर परिषद उपमहापौर पारस सिंघवी, विशिष्ट अतिथि आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. लाखन पोसवाल तथा अधीक्षक डॉ. आर. एल. सुमन

के साथ ही शहर के अन्य जानेमाने समाजसेवी, भामाशाह उपस्थित थे।

पारस सिंघवी ने कहा कि जीतो की इस अनुकरणीय पहल में नगर निगम से जो भी सहयोग आवश्यक होगा सुलभ कराया जाएगा। डॉ. लाखन पोसवाल ने कहा कि चिकित्सालय प्रशासन से संबंधित जो भी सेवा सहयोग आवश्यक होगा हर समय उपलब्ध कराया जाएगा। डॉ. आर. एल. सुमन ने कहा कि जीतो द्वारा उदयपुर शहर में यह पहला निशुल्क कोविड ऑइसोलेशन सेंटर है जिससे आशा है कि त्वरित निशुल्क चिकित्सा सेवा द्वारा नही केवल शहर के अपितु ग्रामीण क्षेत्र के रोगी भी लाभान्वित होंगे।

समारोह को कोविड ऑइसोलेशन सेंटर के संयोजक अनिक नाहर ने भी संबोधित किया। यशवंत आँचलिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन कमल नाहटा ने किया।

100 बिस्तरों वाले कोविड अस्पतालों को डिजाइन कर रही है होस्मैक

उदयपुर (वि.)। वेदांता, बाड़मेर और दरीबा में 100 बिस्तरों वाले अत्याधुनिक फील्ड अस्पताल शुरू करने जा रही है। इन अस्पतालों की डिजाइनिंग, सभी जरूरी साजो सामान मुहैया करवाने और योजना को सही समय से शुरू करने की जिम्मेदारी होस्मैक हेल्थकेयर मैनेजमेंट और प्लानिंग कंसल्टेंसी के ही पास है। होस्मैक के संस्थापक डॉ विवेक देसाई ने कहा कि राजस्थान के अधिकांश क्षेत्रों में चिकित्सा से जुड़ी बुनियादी सुविधाएं पूरी तरह विकसित नहीं हैं, इस कारण आखिरी व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवा पहुंचाना मुश्किल हो जाता है और प्रशिक्षित लोगों और विकसित टैक्नोलॉजी की भी कमी है। इस कमी को पूरा करने के लिए अस्पतालों के साथ-साथ मेडिकल कॉलेजों का तेजी से विकास करने की जरूरत है।

जेके टायर का 100 प्रतिशत लाभांश

उदयपुर (वि.)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. ने वित्तीय वर्ष 2021 की चौथी तिमाही के दौरान 2945 करोड़ रूपए की समन्वित शुद्ध आय अर्जित की है जो की गत वर्ष की तुलना में 63 प्रतिशत ज्यादा है। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि इस दौरान एबिडिटा 119 प्रतिशत वृद्धि के साथ 472 करोड़ रूपए के हो गए। कंपनी ने वृहद विकास के साथ 281 करोड़ रूपए का कर पूर्व लाभ एवं 195 करोड़ रूपए का कर पश्चात लाभ अर्जित किया है। कंपनी के निदेशक मंडल ने अपने इक्विटी शेयर्स पर 100 प्रतिशत लाभांश देने का प्रस्ताव रखा है। वित्तीय वर्ष 2021 के दौरान कम्पनी ने 9145 करोड़ रूपए की समन्वित शुद्ध आय अर्जित की है।

जेके केयर्स प्रोग्राम की घोषणा

उदयपुर (वि.)। जेके ग्रूप ने जेके केयर्स (कोविड असिस्टेंस रिलीफ एंड सपोर्ट) नामक अपनी एक व्यापक पहल की घोषणा की है। यह एक वृहद् कोविड-19 सहायता पैकेज है जो कि कर्मचारी के आश्रित परिवार को राहत प्रदान करने के लिए संस्थान के सभी कर्मचारियों के लिए सुनिश्चित किया है।

संस्थान के अध्यक्ष भरतहरि सिंघानिया ने कहा कि केयरिंग फॉर पीपल के सिद्धांत के अंतर्गत अपने कर्मचारियों, जिन्होंने जिन्दगी गंवा दी है के परिवारों को व्यापक सहयोग देने के लिए कृतबद्ध है। हमारे किसी भी कर्मचारी की मृत्यु होने पर शोकाकुल परिवार को तीन पैमानों - कर्मचारी का मासिक वेतन जारी रखते हुए परिवार की वित्तीय मदद, बच्चों की शिक्षा जारी रखने के लिए मदद व परिवार का मेडिकल इंश्योरेन्स प्रदान करेंगे। यह सभी सहायता परिवार को एक निश्चित कार्यकाल तक उपलब्ध कराई जाएगी।

विश्व हाइपरटेंशन डे मनाया

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल के डायरेक्टर एंड हैड व वरिष्ठ कार्डियोलोजिस्ट डॉ. अमित खंडेलवाल ने कहा कि अमेरिका व चीन में हुई स्टडी में पाया गया कि कोविड से मरने वाले 90 फीसदी लोगों में मृत्यु का कारण हाइपरटेंशन रहा है। कोरोना काल में बीपी को नियंत्रित करना बहुत जरूरी है। इसकी जटिलताएं कई बीमारियों की वजह है। डॉ. खंडेलवाल विश्व हाइपरटेंशन डे पर परिचर्चा में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि हाईब्लड प्रेशर या हाइपरटेंशन हार्ट, ब्रेन और किडनी को गंभीर क्षति पहुंचाता है। यह कोरोनरी आर्टरी डिजीज के रोगियों के लिए साइलेंट किलर है। हाइपरटेंशन कोरोनरी आर्टरी की परतों को भी नुकसान पहुंचाता है। डब्ल्यूएचओ की थीम भी इस बार यही है कि अपने रक्तचाप को मापें। इसे नियंत्रित करें। अधिक समय तक स्वस्थ जीवन जियें। बीपी नापने के लिए कई लोग स्मार्ट वॉच का सहारा ले रहे हैं। एक छोटा सा दिखने वाला डिवाइस दिनभर के ब्लड प्रेशर को नापने में आपकी मदद जरूर करता है लेकिन हाइपरटेंशन के रोगियों को सटीक जांच के लिए डॉक्टर से ही बीपी जांच करवानी चाहिए। रिस्ट वॉच के आंकड़ों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

उदयपुर और दरीबा के अस्पतालों को वेंटिलेटर्स भेंट

उदयपुर (वि.)। एपिरॉक माइनिंग इंडिया लि. ने जीवनरक्षक सहायता के रूप में आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर और गवर्नमेंट कोविड-केयर सेंटर दरीबा, राजसमंद को दस वेंटिलेटर्स भेंट किए हैं।

आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल और प्राधिकारी डॉ. राजवीरसिंह तथा दरीबा में मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रकाशचंद्र शर्मा और उपमुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मेंद्र गुप्ता ने सहायता की। उप निदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा डॉ. पंकज गौर उदयपुर जोन ने कहा कि एपिरॉक ने इस आवश्यकता को पूरा करके एक बड़ी पहल की है। एपिरॉक माइनिंग इंडिया के सीएसआर अधिकारी धनजी पुरी ने तथा प्रबंध निदेशक जेरी एंडरसन ने कहा कि एक संगठन के रूप में, हम सहयोग और प्रतिबद्धता की शक्ति में विश्वास करते हैं और हम साथ मिलकर इस महामारी का मुकाबला कर सकते हैं।

लॉकडाउन ने जीवन को सहज, संयमित एवं अनुशासित बना दिया : डॉ. हंसा हिंगड़

उदयपुर। चौइसवें तीर्थंकर प्रभु महावीर के अनुसार आयुष्य को कोई एक पल घटा नहीं सकता और न एक पल भी बढ़ा सकता है।

अत: इस कोरोना काल में भी हम अपने आत्मबल को मजबूत बनाएं रखें व घबराए नहीं। घरों में सीमित रहते हुए भी हम डिजिटल माध्यमों से पूरी दुनिया से जुड़े हुए हैं। इसके कारण धरती की सेहत सुधर गई है। प्रकृति निखर उठी है। जल, ध्वनि,वायु आदि विभिन्न प्रकार के प्रदूषण कम हो गए हैं। पशु-पक्षी सहजता से जी पा रहे हैं। ये सब सुखद परिणाम हैं। लॉकडाउन ने हमारे जीवन को सहज, संयमित व अनुशासित बना दिया है।

ये विचार श्री शांति क्रांति जैन श्रावक संघ बीकानेर के तत्वावधान में 'लॉकडाउन वरदान है या अभिशाप' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिता में उदयपुर की डॉ. हंसा हिंगड़ ने व्यक्त किये।

अपने 3 मिनट के ऑडियो-वीडियो के माध्यम से डॉ. हिंगड़ ने 'लॉकडाउन वरदान है' विषय के पक्ष में बोलते हुए कहा कि इस समय वर्क फ्रोम होम के कारण हम संयुक्त परिवार की संस्कृति को जी पा रहे हैं। तीन पीढ़ियों को एक साथ रहने का अवसर मिल रहा है। बच्चों को कहानियों के साथ संस्कारित करने का अवसर हाथ आया है। मितव्ययिता बढ़ी है। फिजूलखर्ची घटी है तथा शारीरिक श्रम में अभिवृद्धि हुई है। साथ बैठकर खाने का लुफ्त उठाया जा रहा है। जीवन की क्षणभंगुरता के एहसास ने हमें उदार बनाया है।

डॉ. हिंगड़ की दृष्टि में आचार्य श्री नानेश की सामाजिक क्रांति फलीभूत हुई है। सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में बाह्य आडंबर समाप्तप्राय: हो गए जिससे आम आदमी को एक नई दिशा मिली है। आपसी स्नेह के साथ परिजनों से हमारी बॉन्डिंग मजबूत हुई। इससे जीवन को देखने-समझने का हमारा नजरिया बदल गया।

प्रतियोगिता का सुखद पक्ष यह रहा कि इसमें हंसाजी ने अपनी बेहतरीन प्रस्तुति द्वारा सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। भिवाड़ी की माला जैन व जयपुर की आयुषी जैन क्रमश: द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं ।

प्रतियोगिता दो चरणों में पूरी हुई। पहले चरण में दर्शना बांठिया, कविता सेठिया, सरिता दस्सानी और प्रेम सोनावत निर्णायक रहे जबकि द्वितीय चरण में संजय सांड, मीना दस्सानी और पवन सोनावत थे । दोनों चरणों में उदयपुर की डॉ. हंसा हिंगड़ ने बाजी मारी।

- सुदर्शनसिंह भाटी

बालसाहित्य प्रतियोगिता परिणाम

सलूंबर (वि.)। सलिला संस्था द्वारा आयोजित बालसाहित्य प्रतियोगिता में प्रथम चित्तौड़गढ़ की उषा सोमानी, द्वितीय कोटा के भगवती प्रसाद गौतम तथा तृतीय दिल्ली की सरिता गुप्ता रहीं जिन्हें क्रमश: तीन, दो एवं डेढ़ हजार की नकद राशि प्रदान की जाएगी। सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ विमला भंडारी ने बताया कि इसके अलावा डॉ. शील कौशिक, सिरसा, अलका प्रमोद, लखनऊ, डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, भोपाल, गुडविन मसीह, बरेली, रोचिका शर्मा, चेन्नई एवं संतोषकुमार सिंह, मथुरा को उनकी श्रेष्ठ आत्मकथा पर प्रत्येक को 500 रूपये की राशि दी जाएगी।

भारतीय सेना को हाईटेक एंबुलेंस भेंट

उदयपुर (वि.)। मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और महाराणा प्रताप स्मारक समिति के अध्यक्ष लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने भारतीय थल सेना को 22 लाख रुपए कीमत की एक हाईटेक एंबुलेंस भेंट की है। मेवाड़ ने यह एंबुलेंस एकलिंगगढ़ छावनी के ब्रिगेडियर शेखर को भेंट की ताकि इसका उपयोग कोरोना पीड़ितों सहित अन्य बीमारियों से ग्रसित गंभीर मरीजों के उपचार में किया जा सके। लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि कोरोना महामारी की इस दूसरी लहर में सेना ने देशभर में जनता के बचाव-उपचार के लिए जमीनी स्तर पर सराहनीय कार्य किया है।

मीडिया शिक्षा के 100 वर्षों की यात्रा पर शतवर्षी विशेषांक

जयपुर से प्रकाशित मीडिया जर्नल कम्युनिकेशन टुडे ने अपने रजत जयंती वर्ष के अवसर पर भारत में मीडिया शिक्षा की एक सदी की यात्रा पर दो महत्वपूर्ण विशेषांकों का

प्रकाशन कर एक शताब्दी का लेखाजोखा और उससे जुड़े विभिन्न मुद्दों के सन्दर्भ में शोधपरक जानकारी प्रकाशित की है।

जर्नल के सम्पादक प्रो. संजीव भानावत ने बताया कि जनवरी से मार्च व अप्रैल से जून के दो अंकों में भारत के सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के केन्द्रीय तथा प्रादेशिक विश्वविद्यालयों के साथ-साथ निजी एवं डीम्ड विश्वविद्यालयों व संस्थानों में मीडिया शिक्षा की शुरुआत व उनके विकास का विस्तृत विवरण प्रकाशित किया गया है।

विश्वविद्यालय स्तर पर मीडिया शिक्षा की आवश्यकता को भारत में लगभग एक सदी पहले ही महसूस कर लिया था। वर्ष 1920 में अदयार विश्वविद्यालय, चेन्नई में डॉ. एनी बेसेंट के प्रयत्नों से कला संकाय के अन्तर्गत पत्रकारिता का पहला औपचारिक पाठ्यक्रम शुरू किया गया जबकि तमिलनाडु सेंट्रल यूनिवर्सिटी के प्रो. जी. रविंद्रन का मानना है कि पत्रकारिता का पहला पाठ्यक्रम 1917 में नेशनल कॉलेज ऑफ कॉमर्स, नेशनल यूनिवर्सिटी चेन्नई में प्रारम्भ किया गया। बाद में रहम अली अल हाशमी ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पत्रकारिता पाठ्यक्रम के प्रभारी के रूप में पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया।

पत्रकारिता पर पहली व्यावहारिक पुस्तक 'फन-ए-सहाफत' लिखी गई। व्यवस्थित रूप से पत्रकारिता का पाठ्यक्रम सन् 1941 में पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर में प्रो. पी. पी. सिंह के प्रयत्नों से शुरू किया गया था। यहां प्रतिवर्ष 40 विद्यार्थियों के बैच के साथ स्नातकोत्तर स्तर का पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। भारत विभाजन के साथ सन् 1947 में इसका कैंप ऑफिस दिल्ली शिफ्ट हो गया। प्रो. सिंह ने अमेरिका और इंग्लैंड में पत्रकारिता की पढ़ाई की। आजादी के बाद यह विभाग कुछ समय तक दिल्ली में संचालित हुआ और उसके बाद सन 1962 में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में स्थानांतरित हो गया। इस प्रकार सन 2020 में भारत में मीडिया शिक्षा की एक सदी की यात्रा पूरी हो गई।

कम्युनिकेशन टुडे ने अपने प्रकाशन के 25 वर्षों में कोविड-19 एवं मीडिया, मीडियाकर्मियों के लिए आचार संहिताओं का संकलन, इंटरप्ले बिटविन इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया, भारत में मीडिया का परिदृश्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार साहित्य सन्दर्भिका, विदर जर्नलिज्म एंड पीआर एज्युकेशन, ह्यूमन राइट्स एण्ड मीडिया आदि विषयों पर केन्द्रित विभिन्न विशेषांकों का समय-समय पर प्रकाशन किया है।

कम्युनिकेशन टुडे के अकादमिक योगदान पर महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा और लुधियाना के कृषि विश्वविद्यालय में भी शोधकार्य किया गया। पब्लिक रिलेशंस काउंसिल ऑफ इंडिया ने 2011 में इस पत्रिका को चंडीगढ़ में आयोजित अपनी अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में एक्सटर्नल मैगजीन कैटेगरी में गोल्डन अवार्ड से सम्मानित किया।

- धनुश्री

पं. उपाध्याय के चिंतन में भारतीय सांस्कृतिक विरासत सर्वोच्च

हिमाचलप्रदेश विश्वविद्यालय शिमला की पंडित दीनदयाल उपाध्याय पीठ द्वारा आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, संपादक और समाजसेवी डॉ. महेशचंद्र शर्मा ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति के नव स्वरूप को प्रतिष्ठित करके राष्ट्र को नई दिशा दिखाने का कार्य किया। उनके दर्शन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय दर्शन की परम्परा का सम्मान हुआ है।

पाश्चात्य विचार प्रणालियों के दुष्प्रभाव के कारण भारतीय राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति प्रकट नहीं हो सकी। पं. दीनदयाल ने भारतीय राष्ट्रवाद को पाश्चात्य राष्ट्रवाद से अलग माना। उनकी दृष्टि में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही हिन्दू राष्ट्रवाद है।

हिन्दू जीवन दर्शन में संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना की गई है। मनुष्य तो दूर उसमें संसार के समस्त जीव-जंतु का भी स्थान है। पंडितजी किसी चीज को टुकड़ों-टुकड़ों में देखने के आग्रही नहीं थे। वे संपूर्ण जगत में एकात्मता का अनुभव कराना चाहते थे।

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, नई दिल्ली के उपनिदेशक मा. सुरेश कारुणिक ने कहा कि आज का इतिहास अपूर्ण और भ्रांतिपूर्ण है। यह भारतीय संस्कृति को पूर्णतः प्रस्तुत नहीं करता। अफगानिस्तान से श्रीलंका तक फैली भारतीय संस्कृति मानव को प्रकृति का सहगामी-सहचर मानती है। ऋषि-मुनि प्रकृति के सहचर थे।

प्रकृति पर निर्भर रहने से ही वे 500 वर्ष तक जीवित रह सकते थे। भारतीय संस्कृति में गाय का पौराणिक महत्व प्रतिपादित करते कारूणिक ने कन्नड़ भाषा के हवाले से कहा कि जहां गोबर रखा जाता है वह स्थान पवित्र हो जाता है। सूखने पर गोबर भोजन पकाने हेतु ईंधन बनता है। गोबर के उपले जलने पर उसकी राख मस्तक पर लगाने से आध्यात्मिकता का भाव जगता है ।

उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति के मूल आधार वेद, पुराण, उपनिषद, पूर्णत: वैज्ञानिक हैं। इस धरती पर रहने वाले प्रत्येक मानव को धरती और प्रकृति से प्रेम करना होगा। मानव सुरक्षित, संस्कारित जीवन जी सके इसके लिए भारतीय होना आवश्यक है। हिन्दू धर्म और हिन्दू सभ्यता ही भारतीय सभ्यता है। उसे अंगीकृत करने से ही मानव जीवन श्रेष्ठ, व्यावहारिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ एवं सशक्त बन सकता है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर प्रो. ज्योति प्रकाश, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद शर्मा, प्रो. अनिल सौमित्र, डॉ. रंजना श्रीवास्तव, डॉ. भावना शर्मा, डॉ. विनोद बब्बर, डॉ. मंजू पूरी, सुश्री विशाखा, सुश्री सोनाली रास्पा, कमल, रमन कायथ, अंकेशकुमार, मोहरसिंह 1-2,अमन चौबे, भगवानदास, रसमीस, भुनेश्वरसिंह, वरिष्ठ पत्रकार सुनीलकुमार शुक्ला, अंकितकुमार, डॉ. सपना चंदेल, संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्यामजी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के समन्वयक, संयोजक, उपाध्याय पीठ के अध्यक्ष प्रो. मनोज चतुर्वेदी थे।

- सुरेश कारुणिक

37 ऑक्सीजन व 5 मोबाइल ऑक्सीजन बैंक का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। सेवा सहयोग समर्पण की प्रतीक बनी भारतीय जैन संघटना ने कोरोना काल में मिशन राहत के तहत पीड़ित मानवता की सेवा में व्यापक स्तर पर सेवा अभियान के तहत मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के मुख्य आतिथ्य तथा केंद्रीय जलशक्तिमंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत की अध्यक्षता में प्रदेश के 37 स्थानों पर ऑक्सीजन बैंक एवं 5 मोबाइल ऑक्सीजन बैंक का वर्चुअल उद्घाटन हुआ।

गहलोत ने कहा कि देश मे जब भी चुनौती आयी है, राजस्थान सदैव अग्रणी रहा है। मैंने कोरोना के इस संकटग्रस्त कालखंड में सभी राजनैतिक दलों के प्रमुखों, धर्मगुरुओं, स्वयंसेवी संस्थाओं ने मिलकर इसको नियंत्रण के लिए भरपूर प्रयास किए हैं। शेखावत ने कहा कि अनेक लोग आपदा को अवसर में बदलते हैं। कुछ लोग सेवा को अवसर के रूप में देखते हैं और कुछ धनउपार्जित का अवसर देखते हैं। अधिकांश लोग संस्कार और सेवा के माध्यम से आगे आए हैं और अपनी अपनी क्षमता के अनुसार तन, मन, धन से सहयोग कर रहे हैं।

बीजेएस के प्रदेशाध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने बताया कि विशेष अतिथि राजस्थान के मुम्बई प्रवासी प्रसिद्ध उद्योगपति मोतीलाल ओसवाल, वल्लभभाई भंसाली, प्रदीप राठौर, मुफतराज मुणोत ने भी संबोधित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र लुंकड़ एवं संस्थापक शांतिलाल मूथा ने स्वागत-सत्कार किया।

स्वास्थ्य सेवा में सिम्स की अनूठी उपलब्धि

उदयपुर (वि.)। सिम्स अस्पताल अहमदाबाद में एक वरिष्ठ नागरिक को नया जीवन मिला है। मुंबई निवासी चंद्रकांत पटेल मार्च में पत्नी, बेटे और दोस्तों के साथ नैनीताल छुट्टी मनाने गए थे। वहां तेज बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई पर उन्हें हल्द्वानी के पास एक अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उनका कोविड परीक्षण पॉजिटिव आया। वे 12 दिनों तक भर्ती रहे, लेकिन हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। तब उन्हें सिम्स अस्पताल लाया गया। एयर चार्टर सर्विस कंपनी एयरोट्रांस सर्विस के जरिए उन्हें पंतनगर से अहमदाबाद स्थानांतरित किया गया। सिम्स में क्रिटिकल केयर मेडिसिन के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. भाग्येश शाह ने कहा कि जब मरीज को भर्ती कराया गया, तो उन्हें गंभीर श्वसन संकट, फेफड़ों में 90 प्रतिशत तक संक्रमण, 80 प्रतिशत ऑक्सीजन संतृप्ति स्तर और अन्य समस्याएं दिखाई दी। इस पर उन्हें वैकल्पिक एचएफएनसी और एनआईवी सपोर्ट के साथ उपचार प्रदान किया गया। इस चरण में प्रतिदिन 6-8 घंटे प्रोन पोजिशन(पेट के बल लेटाना) प्रक्रिया की जाती थी। उन्हें उचित एंटीबायोटिक्स प्रदान करके उपचार किया गया। वरिष्ठ पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. प्रदीप डाभी ने ब्रोकोस्कोपी करके निमोनिया के उपचार में सहयोग दिया। अस्पताल से छुट्टी मिलने पर पटेल ने अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. केयूर पारिख, डॉ. भाग्येश शाह का आभार जताया।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ। कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1500/
साहित्यिक चौपाल	1000/
वार्षिक संस्थागत	500/
वार्षिक व्यक्तिगत	300/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

उदयपुर की स्मृतियां लिए कीर्ति राणा (5)

उदयपुर को मिला आयआयएम :

यह किस्सा उन पत्रकारों को पसंद आएगा जो खबरों को सूंघना या उससे खेलना जानते हैं। पत्रकरिता में आने वाले युवा चाहें तो सीख सकते हैं कि कैसे कोई खबर शहर हित में मील का पत्थर साबित हो सकती है। यह पूरा मामला उदयपुर की सक्सेस स्टोरी के रूप में भी लोगों के जेहन में है।

मेरी पत्रकारिता में उदयपुर शहर ने मुझे खूब ऊंचाइयां भी प्रदान की। पिछले पंद्रह साल में जवान हुए युवा वर्ग की तरह पत्रकारिता में आई युवा पीढ़ी के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि उदयपुर को आईआईएम की जो सौगात मिली है, वह आईआईटी के बदले में मिली है। इसके लिए भास्कर के आह्वान पर उदयपुर के रहवासियों द्वारा गांधीगिरी के साथ किए प्रभावी आंदोलन के अंतर्गत रन फॉर आईआईटी के लिए करीब 50 हजार लोग दौड़े थे। भास्कर ग्रुप की इनहाउस मैगजिन संवाद में भी इस पूरे अभियान-दौड़ को कवरेज मिला था।

यकायक बदली राजनीतिक परिस्थिति के चलते आईआईटी तो तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे अपने क्षेत्र में ले गईं लेकिन उदयपुर की जागरुकता का ही सकारात्मक परिणाम रहा कि इसके बदले उदयपुर को आईआईएम की सौगात राजस्थान सरकार को देना पड़ी। यह पूरा घटनाक्रम जितना रोचक रहा उतना ही पत्रकारिता में हवा का रुख मोड़ने वाला भी रहा है। इस पूरे मामले में यह भी कम रोचक नहीं कि इन दोनों संस्थानों के लिए कहीं से कहीं तक उदयपुर का नाम नहीं था।

एक रात डाक एडिशन छोड़ने की तैयारी चल रही थी कि सम्पादकीय टीम के वरिष्ठ साथी सैयद हबीब ने बताया कि केंद्र सरकार ने 6 आईआईटी की मंजूरी दी है जिसमें से एक राजस्थान के लिए मंजूर किया है लेकिन यह तय नहीं किया है कि राजस्थान के कौनसे शहर में स्थापित करेंगे। मैंने कहा आईआईटी तो उदयपुर को ही मिलना चाहिए। टीम के बाकी साथियों को बुलाकर उनकी राय जानी तो उन सबका कहना यह था कि सरकार की घोषणा में राजस्थान के लिए मंजूरी दी है, उदयपुर का तो कहीं नाम है नहीं।

मैंने पूछा आप सब उदयपुर में आईआईटी चाहते हैं या नहीं। सब ने कहा चाहते हैं। मैंने समझाया बस अभी से यही मानकर काम करें कि उदयपुर को ही मिलेगी यह सौगात। सैयद हबीब को तत्कालीन सांसद (स्व.) किरण माहेश्वरी से, प्रकाश शर्मा को राज्यसभा की पूर्व सांसद गिरिजा व्यास से, गीता सुनील को सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति सहित अन्य प्रोफेसरों से बात करने को कहा। हमने सब से बातचीत का एजेंडा तैयार ही ऐसा किया था कि सबने उदयपुर को आईआईटी के लिहाज से उपयुक्त ही बताया।

अगले दिन जब उदयपुर के बाकी अखबारों ने पेज वन पर छापा कि छह आईआईटी में से एक राजस्थान को मिलेगी तब हमारी लीड का 'भास्कर मुद्दा' था कि उदयपुर को मिलना चाहिए आईआईटी' बस अगले दिन से इसे अभियान का रूप दे दिया। जिन नामचीन लोगों की वजह से किसी भी शहर को पहचाना जाता है हमने भी उदयपुर के ऐसे प्रबुद्धजनों-संगठनों के अध्यक्षों के फोटो-विचार छापने के साथ ही इनके विचारों की गहराई के लिहाज से यह खबरें भी देना शुरु कर दी कि रेल, बस, हवाई सफर, होटल व्यवसाय आदि के कारण पूरे राजस्थान में उदयपुर खास पहचान रखता है और देशभर के स्टूडेंट को भी आवागमन के सभी संसाधन उपलब्ध हैं।

तीन चार दिन चले इस अभियान का असर यह हुआ कि शहर के नामचीन-प्रबुद्ध वर्ग ने एक बैठक आयोजित की। इस बैठक में राजेंद्र कुंभट, के. एस. मोगरा, अरविंद सिंघल (पायरोटेक-वोलकेम), बीएन कॉलेज वाले तेजसिंह बांसी, घनश्यामसिंह और मनोहरसिंह कृष्णावत, झीलों के लिए आंदोलन चलाने वाले अनिल मेहता आदि शामिल थे। बाद में इस आंदोलन समिति से श्रीजी हुजूर अरविंदसिंह मेवाड़ भी जुड़ गए। खासतौर पर भास्कर को भी इस बैठक में आमंत्रित किया गया था। बैठक में सभी प्रमुखजनों ने आंदोलन करना तय किया। जब रूपरेखा बनाई जा रही थी तो मैंने सुझाव दिया कि इसमें शहर के सभी अखबारों के प्रतिनिधियों-संपादकों को भी आमंत्रित करना चाहिए। भास्कर ने भले ही शुरुआत की लेकिन यह उदयपुर के हित का मामला है।

आंदोलन को शहर से जोड़ने के लिए कमेटी ने 'रन फार आईआईटी' का निर्णय किया। शहर के शैक्षणिक संगठनों, व्यापारिक-सामाजिक संगठनों के समर्थन का असर यह हुआ कि उस सुबह करीब 50 हजार लोग हाथों में पोस्टर-तख्तियां लेकर दौड़े। उदयपुर में हुई इस दौड़ की पूरे राजस्थान में चर्चा रही।

- क्रमशः

अनूप मंडल द्वारा जैन संतों के खिलाफ दुष्प्रचार अपमान से जीने की बजाय मरना ज्यादा बेहतर : कटारिया

उदयपुर (वि.)। विगत कुछ समय से अनूप मंडल द्वारा जैनधर्म और साधु-साध्वियों के खिलाफ दुष्प्रचार कर जैनधर्म के विरूद्ध लोगों को उकसाया जा रहा है। इन्हीं षडयंत्रकारी प्रवृत्तियों के खिलाफ जैन सोश्यल ग्रुप मेवाड़ रीजन और जीतो उदयपुर चैप्टर के संयुक्त तत्वावधान में जूम एप के माध्यम से 'जागो जैनों' पर एक विशाल सभा आयोजित की गई।

नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने समाजजनों से आह्वान किया कि मीडिया की बजाय जमीन पर आकर आमने-सामने मुकाबला करना होगा। अपमान से जीने की बजाय तो मरना ज्यादा बेहतर है। उन्होंने समाज को एकजुट होकर इस तरह की प्रवृत्तियों से डटकर मुकाबला करने का आह्वान किया।

नगर निगम के उपमहापौर पारस सिंघवी ने कहा कि हिंसा का प्रतिकार नहीं करना कायरता की निशानी है। जैन तीर्थस्थलों पर जो खतरा मंडरा रहा है उससे निपटने की आवश्यकता है। सभी समाजजनों को धर्म-संप्रदाय से ऊपर उठकर एकजुटता से मुकाबला करना है।

सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष शांतिलाल वेलावत ने कहा कि हमें सक्षम नेतृत्व को साथ लेकर इस लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाना है। सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष यशवंत आंचलिया ने कहा कि वक्त की नजाकत को समझते हुए हमें मिलकर धर्म रक्षक सेना की स्थापना करनी चाहिए जो तत्काल ऐसी विषम परिस्थितियों से निपटने में सक्षम हो।

माइनोरिटी कमिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी ने कहा कि इस तरह के मसले रणनीति बनाकर कुटनीतिक तरीके से हल करने चाहिएं जिसके लिए राष्ट्र स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। जैन सोश्यल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आर. सी. मेहता ने जैन समाज को संगठित होकर अपनी शक्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यों में लगाने पर बल दिया। प्रारंभ में मेवाड़ रीजन के चैयरमेन मोहन बोहरा तथा जीतो उदयपुर चैप्टर के चैयरमेन राजकुमार सुराणा ने सभी का स्वागत किया।

पीआरओ एडमिन आलोक पगारिया ने बताया कि समारोह में अनिल नाहर, अरूण मांडोत, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अर्जुन खोखावत, श्रमणसंघ के ओंकारसिंह सिरोया तथा कांतिलाल जैन, महासभा के मंत्री कुलदीप नाहर, शिक्षक नेता भंवर सेठ, ओसवाल बड़े साजन सभा के पूर्व अध्यक्ष दिलीप सुराणा, महावीर स्वाध्याय समिति के अध्यक्ष प्रकाश कोठारी, पिंकी मांडावत, पार्षद डॉ. शिल्पा जैन, राकेश जैन, लोकेश कोठारी, डॉ. किरण जैन, क्षितिज कुंभट, नुकुल मेहता, अभिषेक पोखरना, प्रकाश सिंघवी, डॉ. सुभाष कोठारी, लादूलाल मेड़तवाल, डॉ. ओ. पी. चपलोत, श्याम एस. सिंघवी, निर्मल मालवी आदि ने जैन समाज की एकता पर बल दिया।

जीतो के मुख्य सचिव कमल नाहटा ने जैन समाज पर हो रही इस तरह की प्रवृत्तियों पर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन प्रेषित कर शीघ्र दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

जेबीएन-ओलम्पियंस का शपथ ग्रहण

उदयपुर (वि.)। जीतो के अंतर्गत स्वधर्मी व्यवसायियों की मदद के लिए गठित जीतो बिजनेस नेटवर्क 'जेबीएन' की उदयपुर में शुरुआत की गई। जीतो के अध्यक्ष राजकुमार सुराणा ने बताया कि उदयपुर के जेबीएन चैप्टर का नाम जेबीएन-ओलम्पियंस रखा गया है।

जेबीएन का कन्वीनर क्षितिज कुम्भट, अध्यक्ष प्रतीक हिंगर, उपाध्यक्ष जतिन नागोरी, सचिव निपूर्ण पोरवाल को बनाया गया है। इस अवसर पर सुराणा ने कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। जेबीएन के चैयरमेन संजय जैन ने जेबीएन-ओलम्पियंस लॉन्च किया। महासचिव ऋषभ श्यामसुखा ने जेबीएन की जानकारी दी। संचालन जीतो के सचिव कमल नाहटा ने किया। कार्यक्रम में संदीप मारू, विनय नाहटा, तुषार मेहता, मनीष नाहर, स्वास्तिक रांका, समवेग चौकसी, अक्षय जैन आदि उपस्थित थे।

महनीय चित्रकार माली का महाप्रयाण

डॉ. विष्णुप्रकाश माली का 29 मई को महाप्रयाण हो गया। एक शिक्षक से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर वे कॉलेज व्याख्याता के रूप में अपनी पहचान बनाये रहे। वे चित्रकला के साथ इतिहास, पुरातत्व में भी अपनी दखल रखते थे। कला संस्था टखमण-28 के वे संस्थापक सचिव रहे। कला विषयक प्रदर्शनियों, संवादों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं में सदैव उनकी अहम भूमिका रही।

उनके निधन पर कला-संस्कृति क्षेत्र के डॉ. सुरेश शर्मा, डॉ. लक्ष्मीलाल वर्मा, डॉ. चन्द्रकांता बंसल, डॉ. मीना बया, डॉ. रघुनाथ शर्मा, डॉ. मनोहर श्रीमाली, डॉ. मोनिका चौधरी, डॉ. मनीषा चौबीसा, डॉ. शिल्पा मेहता, डॉ. प्रीति भट्ट, प्रो. पुष्पा मीणा, डॉ. चित्रसेन, डॉ. देव कोठारी, डॉ. महेन्द्र भानावत, प्रो. चेतन टिक्कीवाल, डॉ. दीपिका माली, डॉ. ए. एल. दमामी, डॉ. कहानी भानावत, डॉ. तुक्तक भानावत ने डॉ. माली के निधन को कला जगत की अपूरणीय क्षति बताया।

- डॉ. कहानी भानावत

तंबाकू निषेध दिवस पर वर्चुअल कार्यशाला

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक डेंटल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, देबारी के जन स्वास्थ्य दंत चिकित्सा विभाग द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन किया गया।

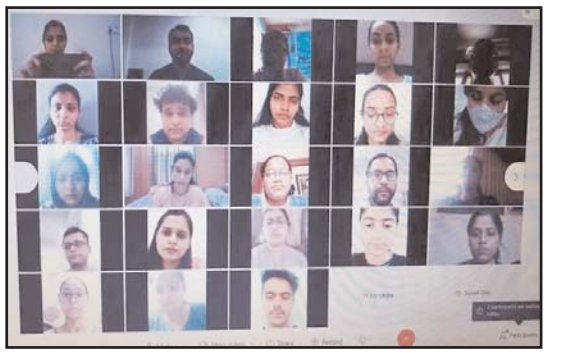

मुख्य वक्ता नवी मुम्बई के पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट डॉ. निखिल भानुशाली थे। कार्यशाला में दंत चिकित्सकों द्वारा मरीजों को तम्बाकू की आदत से मुक्ति पाने के तरीकों की जानकारी दी गई। इस दौरान तम्बाकू निषेध काउन्सलिंग एवं दवाइयों के माध्यम से तम्बाकू की लत को छुड़वाने के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। कार्यशाला में प्रिंसिपल, डॉ. भगवानदास राय, विभागाध्यक्ष डॉ. कैलाश असावा, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मृदुला टॉक सहित 100 दंत चिकित्सक मौजूद थे। इसके अतिरिक्त अस्पताल परिसर में तम्बाकू मुक्ति जागरूकता प्रदर्शनी लगाई गई एवं रोगियों को तम्बाकू छोड़ने की शपथ दिलाई गई। मुख्य वक्ता का ई-सर्टिफिकेट द्वारा अभिनंदन किया गया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।